पद भाग क्र.५

१२ :– भ्रम बिंधुसन को अंग

१३ :– बिनती को अंग

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	दुनिया भ्रम माय भुलाणी ११६	१
२	जगत अचाई मित की रे १६१	१
३	जे आ मुगत भेष सुं पावे १६९	३
४	जिण मुख राम कहोरी रसना १७५	४
५	जोगिया सत्त सबद ले भेवा १८०	५
६	जुग मे सोई जन ऊतरे पार १८६	६
७	जुग मे अेक भ्रम हे भारी १८८	७
८	केवळ राम रटो मन मेरा २००	८
९	मै तो अेक सबद सत्त लिया २१५	९
१०	में तुज बूझुँ ढुँड्यिां २१७	१०
११	पांडे अंत काळ काहाँ जावो २५८	१२
१२	पांडे अेक सबद सत्त लीजे २६१	१३
१३	पांडे पाखंड काय चलावो २६६	१४
१४	पांडे समज चेत हुय भाई २६७	१५
१५	पांडे समज सिंवर हल साई २६८	१६
१६	पांडे समज्या यूं तत्त धारे २७०	१८
१७	पिंडता भूल दोनुं घर मांही २७७	१८
१८	पिया मै भूली हो २७८	२०
१९	साधो भाई भेद बिना जुग डोले ३११	२१
२०	साधो भाई राम भजन बिना झूठा ३१५	२२
२१	साधो भाई तत कल लेहो बिचारी ३१८	२३
२२	संतो भाई अे क्यूँ मोख न जावे ३४२	२४
२३	संतो भाई अे क्युँ मोख न जावे ३५०	२५
२४	संतो ओ जग बडो अग्यानी ३६७	२७
२५	संतो सत्त सबद सो न्यारा ३६९	२८

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	अेसा भेव बतावजो १४	२९
२	गुरुजी कारज किस बिध कीजे १३४	३०
३	जंतर मंतर अेक न जाणुं १६७	३१
४	किरपा करो गुरु सिष कूं तारो २०२	३२

५	कोहो इण मन सुं क्या करुं २०४	३३
६	मै बहोत दुखी जुग माय २१२	३४
७	मेरे मनकी दुबध्या मेटो प्रभुजी २३५	३४
८	मोबल कर्म न जावे प्रभुजी २४३	३६
९	प्रभुजी मै काहा कराँ इस मन को २८१	३८
१०	प्रभुजी मेरे मन कूं हिम्मत दिजे २८२	३९
११	प्रभुजी मेरी बाहाँ संभावो २८३	४०
१२	प्रभूजी मै किसका सरणाँ धारुं २८४	४१
१३	समरथ मे तेरा सरणा लीया ३२७	४३
१४	सुणज्यो अर्ज हमारी प्रभुजी ३८६	४४
१५	तुम बिन आन ओर नहि धारुँ ४०४	४५

१९६

|| पदराग सोरठ ||

दुनिया भ्रम माय भुलाणी

दुनिया भ्रम माय भुलाणी ||

पूजे नक्कल असल की निंद्या || बोले मे ते बाणी || टेर ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि, यह सभी दुनिया भ्रम मे भुल गयी है की, यह दुनिया नकल की याने महादेव और पार्वती इनके मनुष्य ने हात से बनाये हुअे लिंग और भग की पुजा करते है और असली की लिंग और भगकी निंदा करते है। मै सही हुॅ और तु गलत है ऐसे असल और नकल लिंग भग के लिए मुख से बाणी बोलते है। ||टेर||

सरप मांड पूजणे जावे || असल नाग कूं मारे ||

साचा साहेब घट मे बेठा || ध्यान पत्थर को धारे || १ ||

यह दुनिया दिवाल पर सर्प बनाकर पूजने जाती है, जबकी वैसा ही असली नाग निकला तो सभी लोग लुगाई इकठ्ठा होकर उसे जानसे मारते है। यह दुनिया सच्चा साहेब घट में बैठा है उसका ध्यान नहीं करते और पत्थर की मुर्ति बनाकर उस में ध्यान लगाते ||१||

पितळ को नर सिंघ बणायो || सब पूजण कूं आवे ||

असल न्हार कूं देर नगारा || सब मारण कूं जावे || २ ||

गाँववाले पितल का नरसिंघ बनाते और उसे पूजने जाते और अस्सल सिंघ गाँव में आया तो सभी गाँववाले लोगो को इकठ्ठा करते और उसे भागते नहीं आता ऐसे बंदीस्त कर जान से मारते ||२||

माटि की गिणगोर बणावे || पूजे लोक लुगाई ||

घट घट इसर गवर बिराजे || तां की खबर न काई || ३ ||

सभी लोग लुगाई मिट्टी की गणगौर बनाते और उसकी पूजा करते और घट घट में शंकर और गौरी रहती उसकी खबर भी नहीं करते ||३||

भग लिंग नकल जाय सींचे || असल जिणा की निंद्या ||

के सुखराम जक्त ओ पिंडत || झूट भ्रम सूं बिन्द्या || ४ ||

महादेव पार्वती के पत्थर से बने हुए नकली भग लिंग पर पानी सिंचकर पूजा करते अस्सल लिंग और भग से पुरुष स्त्री भोग करके दुनिया बसाते उसकी दुनिया निंदा करते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ,ऐसे दुनिया के लोग और पंडित झूठे भ्रम में अटके है। ||४||

१६१

|| पदराग धनाश्री ||

जगत अचाई मित की रे

जगत अचाई मित की रे || फेर फार नहि कोय ||

राम जग के मांय हे रे ।। जगत राम मे होय ।। टेर ।।

जगत सच्चा भी है और मृतक भी है इसमे कोई फेरफार नहीं। राम,तीन लोक चौदा भवन में है और तीन लोक चौदा भवन राम में है ।।टेर।।

माया हर तो अेक हे रे ।। न्यारो सुण्यो नहि कोय ।।
रूँख बीज के माँय हे रे ।। बीज रूँख में होय ।। १ ।।

माया और हर एक है न्यारा कही सुना नहीं। पेड में बीज है और वही बीज बोने के बाद पेड उगता ऐसा बीज में पेड है ।।१।।

जीमण अन तो अेक हे रे ।। नार पुरूष नहिं दोय ।।
जो जन जब ही समजिया रे ।। ज्याहाँ त्याहाँ हर ही होय ।। २ ।।

भोजन और अनाज एक है ऐसे नारी–पुरुष एक जीवब्रम्ह है,दो नहीं है। जो जन जब एक समझेगा फिर उसे जहाँ वहाँ हरी ही दिखेगा ।।२।।

कूवो धरणी माँय हे रे ।। धरण कुवा मे होय ।।
ज्यूँ गडो जळ अेक हे रे ।। केबत कहिये दोय ।। ३ ।।

कुआँ धरणी में है और धरणी कुएँ में है। गड्ढा किया तो धरणी कुआँ बन जाती और वही कुआँ मिट्टी से भर दिया तो धरणी बन जाती ऐसा कुआँ धरणी एक है। बर्फ और जल एक है। बर्फ को गरम किया तो जल हो जाता और जल को थंडा किया तो बर्फ हो जाता ऐसा जल और बर्फ एक है परन्तु कहने के लिए दो है। ।।३।।

दोय कहुँ तो अेक हे रे ।। अेक कहुँ तो दोय ।।
दोय कहुँ ज्याँ बोहोत हे रे ।। गिणतन आवे हे कोय ।। ४ ।।

माया व ब्रम्ह ऐसे दो कहता हुँ तो माया बहुत है,गिनती मे नहीं आती और माया सभी ब्रम्ह है कहता हुँ तो सभी माया में एक ही ब्रम्ह है ऐसा दिखता ।।४।।

पाप केहुँ ज्याँ पुन हे रे ।। पुनं केंहु ज्याँ पाप ।।
बाप केहुँ ज्याँ पूत हे रे ।। पूत के हुँ ज्या बाप ।। ५ ।।

पाप सिर्फ पाप कहता हुँ तो पाप यह कोरा पाप नहीं है,उसमे पुण्य है ऐसे ही पुण्य कहता हुँ तो वह कोरा पुण्य नहीं है,उस पुण्य में कुछ पाप है। सिर्फ बाप कहता हुँ तो सिर्फ बाप नहीं है,उससे पुत्र जन्मता इसलिए उसमें पुत्र है और पुत्र को सिर्फ पुत्र कहता हुँ तो वह आगे बाप बनता है ऐसा पुत्र में बाप है और बाप में पुत्र है ।।५।।

जोग केहुँ ज्याँ भोग हे रे ।। भोग कहुँ ज्याहाँ जोग ।।
दुख केहुँ ज्याहाँ सुख हे रे ।। निरमळ केहुँ ज्याहाँ रोग ।। ६ ।।

जोगी कहता हुँ वहाँ भोग है वे इच्छा माया का भोग लेते है और सिर्फ भोग है ऐसा कहता हुँ तो उनमें शील यह योग है। दु:ख कहता हुँ तो पूरा दु:ख नहीं दिखता,जादा दु:खी प्राणी देखने पर सुख महसुस होता और सुख कहता हुँ तो पूर्ण सुख नहीं है,स्वयम् से जादा सुखी

देखने पर दु:ख मालूम पडता। निरोगी कहता हुँ तो पूर्ण निरोगी नहीं हुँ,घटमें कही ना कही रोग और रोगी कहता हुँ तो घट में कही ना कही निरोगी स्थिती है ।।६।।

मोत केहुँ ज्याहाँ जनम हेरे ।। जनम जहाँ मर जाय ।।
अमी केहुँ ज्याहाँ बिष हे रे ।। बिष ज्याहाँ इमरत थाय ।। ७ ।।

मौत कहता हुँ तो आगे जन्म दिखता और जन्मा कहता हुँ,याने जिंदा कहता हुँ तो आगे मौत दिखती ऐसेही अमृत कहता हुँ वहाँ विष है मतलब अमृत जादा पिने पर विष का परिणाम देता है व विष कहता हुँ तो उसमे अमृत है। उसे कम मात्रा मे लेता हुँ तो वह दवाई है ।।७।।

ब्रम्ह ग्यानी नर अेक हे रे ।। बरते हे प्रगट दोय ।।
तीनुं चवदा लोक मे रे ।। जोडे बिनाँ नहि कोय ।। ८ ।।

ब्रम्ह ज्ञानी जीव और नर ये दोनो ही एक ही ब्रम्ह है परंतु रहना सहना अलग है। ब्रम्हज्ञानी मै ब्रम्ह हुँ यह समझता है परंतु नर जीवब्रम्ह होकर भी मैं ब्रम्ह हुँ करके नहीं समझता इसलिये प्रगट रुप में दो दिखते है। इसलिये ज्ञान से रहने में फरक हैं। तीन लोक चौदा भवन में माया यह जोडे से ही है एक नहीं है। जैस धूप है तो छाया है,अमीर है तो गरीब है,चतुर है तो भोला है ऐसे जोडे से है परंतु सतस्वरुप में सभी एक है । ।।८।।

दीसे सोई ब्रम्ह रूप हे रे ।। बोले सोई हर आप ।।
के सुखदेव भ्रम छाड दे रे ।। साच न केवळ जाप ।। ९ ।।

दिखता वह भी जीवब्रम्ह है और बोलता वह भी हर आप याने ही जीवब्रम्ह ही है। इसलिए जीवब्रम्ह और माया यह भ्रम छोडकर सभी जीवब्रम्ह है कोई माया नहीं है समझकर जो सत्य निकेवल है उसका सभी ने जाप करना ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।९।।

१६९

।। पदराग कानडा ।।

जे आ मुगत भेष सुं पावे

जे आ मुगत भेष सुं पावे ।। सबही मुगत काय नही जावे ।। टेर ।।

काल से मुक्ति पाने की रीत भेष धारन करने से होती है तो अभीतक जो जो भेष धारन करके शरीर छोड गए उनकी मुक्ति क्यों नहीं हुई?।।टेर।।

षट दर्सण सुं जे हर रीजे ।। घर का सकळ काय नही सीजे ।। १ ।।

षट दर्शनो से रामजी खुश होते है तो दर्शनो के घर के जो लोग धाम पधारे हे उनकी मुक्ति क्यो नहीं हुई वे मोक्ष में क्यों नहीं सिधाये?।।१।।

जोगी जंगम सेवडा सामी ।। घरमा फकर जगत सब कामी ।। २ ।।

सभी जोगी,जंगम,सेवडे,संन्यासी और घर के सभी फकीर ये सारे संसार के समान षटदर्शन बनके मन के सुख याने पाँच इंद्रियो के सुखों में, काम विषयो में डुबे है और आगे भी विषयोंकी सुखों की चाहना रखते है फिर इनकी मुक्ति कैसे होगी ?।।२।।

अपना अपना धरम बतावे ।। षट दरसण भूला सब जावे ।। ३ ।।

ये षट दर्शन अपना अपना धर्म बताते है इसकारण रामजी को सर्व जगत भूल गए है ।।३।।

सब का धरम अेक हे भाई ।। षट दरषण क्या लोक लुगाई ।। ४ ।।

षट दर्शन रहो या लोग लुगाई रहो इन सब का एक ही धर्म रामजी है। कोई न्यारा न्यारा धर्म नहीं है। कारण मुलमें ये सभी ब्राम्हण,क्षत्रिय,वैश्य व शुद्र इन में एक अमर ब्रम्ह है,ये देहरुपी न्यारी–न्यारी माया रही तो भी मुल में सभी ब्रम्ह है इस सभी के अमर ब्रम्ह में परात्परी परमात्मा अमर पुरुष अविनाशी देव है इसलिए इन सभी का देवता परात्परी परमात्मा अमर पुरुष अविनाशी देव है ।।४।।

के सुखराम बरण सब लोई ।। राम भजे डूबो नही कोई ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,चारो वर्णो में जिसने जिसने राम भजन किया वे कोई भी आज दिन तक डूबे नहीं वे होनकाल के परेके सतस्वरुप में गए परंतु षट दर्शनी एक भी कालसे मुक्त हुआ नहीं,ये षटदर्शनी जादा में स्वर्गादिक में गए। स्वर्गादिक होनकाल के मुख में है। होनकाल के परे नहीं है ।।५।।

१७५

।। पदराग कल्याण ।।

जिण मुख राम कहोरी रसना

जिण मुख राम कहोरी रसना ।। लारे कछू न रहो रे ।। टेर ।।

जो जीभ से रामनाम रटन करता उसको मोक्षफल पाने के लिए ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति, अवतार आदियोने बनाई हुई वेद,शास्त्र,पुराण,गीता की कोई करणियाँ करना बाकी नहीं रहती। रामनाम रटने के विधि में ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,अवतार आदियोने बताये हुए करणीयों के फल कुद्रती लग जाते ।।टेर।।

बेद भागवत साख भरत हे ।। सुखदेव काम दहो रे ।। १ ।।

वेद में ब्रम्हाने,भागवत में कृष्ण ने सिर्फ रामनाम रटने से मोक्ष का फल कुद्रती लग जाता यह साक्ष भरी है। रामनाम से मोक्ष मिलता इसलिए सुकदेव ने स्त्री यह माया त्यागी थी ,काम का दहन किया था और रात–दिन रामनाम जपा था ।।१।।

सारद नारद संकर सक्ति ।। नित ऊठ से सहोरे ।। २ ।।

शारदा,नारद,शंकर,शक्ति ये मोक्ष फल पाने के लिए नित्य उठकर रामनाम का सुमिरन करते है ।।२।।

काग भुसण्डी गोरख हर ग्यानी ।। ने: हचळ होय रहो रे ।। ३ ।।

काग भुसंडी,महादेवका भक्त गोरखनाथ ये सभी ज्ञानी रामनाम जपकर काल के डर से निश्चल हो गए ।।३।।

कह सुखराम सुणो सब ग्यानी ।। ऊँ निर्भे लोक गहो रे ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानीयों को कहते है कि,तुम सभी काल के तीन

लोक चौदा भवन त्यागकर काल के परे का निर्भय लोक प्राप्त करो ।।४।।

१८०

।। पदराग सोरठ ।।

जोगिया सत्त सबद लो भेवा

जोगिया सतसबद लो भेवा ।। भजो देव सिर देवा ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने त्याग करनेवाले त्यागी,सत रखनेवाले सत्ती,तप करनेवाले तपी,मौन रखनेवाले मौनी ऐसे सभी प्रकार के जोगीयों को सतशब्द जो सभी देवो के सिरपर का देव है उसका भेद लेकर भजन करो ऐसा कहा। ।।टेर।।

सुखदेव सा केता जुग माही ।। जनमत छाड सब दीया ।।

जे या मुगत त्याग मे होती ।। जनक गुरू किऊँ कीया ।। १ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जोगीयों को समझा रहे कि सुखदेव सरीखा जगत में त्यागी कौन है?इस सुखदेव ने जन्मते ही मोहरुपी माया त्यागी थी और बन का रस्ता धारण किया था। यदि त्यागन करने से मुक्ति हुयी होती तो सुखदेव की हुयी होती। ऐसे सुखदेव को ग्रहस्थी में भिने हुए जनकराजा को गुरु करने की क्यों जरुरत पडी थी?मतलब त्याग मे मुक्ति नहीं है,मुक्ति सतशब्द में है ।।१।।

पाँडव पांच छटा नारायण ।। सरस साध जन क्राया ।।

जे या मुगत सत्त मे होती ।। बालमीत किऊँ लाया ।। २ ।।

राजसुय यज्ञ जब पंचायन शंख मनुष्य के मुख से फुँके बिना अपने आपसे कड्कडात बजता तब पूर्ण होता यह पारख है। यह पंचायन शंख बंकनाल से उलट्कर त्रिगुटी से मुक्ति में पहुँचा हुआ सतशब्दी संत भोजन करता तब ही बजता। ऐसा संत शरीर के भेषो से बाहर से पहचाने नहीं जाता। इसकारण ऐसे एक मात्र संत को पहचानकर भोजन के लिए निमंत्रित नहीं करते आता। इसलिए राजसुय यज्ञ आयोजीत करनेवाले राज केसभी साधु संतो मे ऐसा कोई साधु रहेगा इस आशा से राज के सभी साधू संत एवम् जगत केलोगो को आदर से निमंत्रण देते है। ऐसा ही राजसुय यज्ञ द्वापारयुग में राजा युधीष्ठिर के यहाँ आयोजीत किया गया था। इस राजसुय यज्ञ मे सभी साधू संत एवम् युधीष्ठिर सह सभी पांड्व और अवतार कृष्ण उपस्थित थे। युधीष्ठिर राजा सत्य बोलनेवाला और सत रखनेवाला साधू था। उसने अपने विरोध के लढाई में शत्रु पक्ष के शत्रु दुर्योधन को अपने विरोध विजय प्राप्त करने का उपाय बताया था। दुर्योधन वज्र याने पत्थर के समान बन जावे तो वह हमारे पक्ष से किसीसे भी मारे नहीं जायेगा ऐसा उपाय दुर्योधन को दिया था।(वह उपाय ऐसा था की,गांधारी अपना पती पुरुष छोड्कर किसी भी अन्य पुरुष को नग्न स्थिती में देख लेती तो वह पुरुष वज्र का बन जाता । फिर वह पुरुष किसीसे भी मारा नहीं जाता।)ऐसा यह सत में पराक्रमी राजा था। राजसुय यज्ञ में युधिष्ठर सह पाँचो पांड्व और छ्ट्वे कृष्ण ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया था। ऐसा प्रसाद ग्रहण करनेके बाद भी पंचायन शंख नही बजा। यदि मुक्ति सत में

होती तो पंचायन शंख बजना चाहिए था। शंख नहीं बजा इसलिए मुक्ति पाए हुए श्वपच जाती के बालमीत को बन से भोजन के लिए बुलाना पडा। इसलिए मुक्ति सत रखने में नहीं है। वह सतशब्द में है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।२।।

बन के ऋषी सकळ मिल सारा ।। उदियालख घर आया ।।
जे या मुगत तप से होती ।। नासकेत किऊँ बाया ।। ३ ।।

नासीकेतु यमपुरी देखके आया। नासीकेतु को अपने श्रेष्ठ से श्रेष्ठ तपी,सभी दादा,परदादा,ऋषी यमपुरी में यमराज के मुजरे बैठे दिखे। यह आँखो देखे समाचार सुनने के लिए उद्यालक पुत्र नासीकेतु के घर बन के सभी छोटे बडे ऋषी इकट्ठा हुए। यदि मुक्ति तप में होती तो यमपुरी में नासीकेतु को सभी ऋषी यम मुजरे क्यों?बैठे दिखते मतलब तप में मुक्ति नहीं है। मुक्ति सतशब्द में है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।३।

हस्तामल जनम नहि बोल्या ।। बरस दवादस तांई ।।
जे या मुगत मून मे होती ।। दत्त पास किऊँ जाई ।। ४ ।।

हस्तामल उम्र के बारा वर्ष तक किसी से भी एक शब्द नहीं बोला। यदि मौन धारने से मुक्ति होती तो हस्तामल दत्त के पास मुक्ति मार्ग पूछने क्यों गया मतलब मौन में यम से मुक्ति नहीं है। मुक्ती सतशब्द में है। ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।४।।

बेद कुराण पुराण अठारे ।। सिध साधक की बाणी ।।
जन सुखराम भेद बिन लाध्या ।। सबे छाच अर पाणी ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,वेद,कुराण,अठरा पुराण,सिध्द तथा मायावी सभी साधुओंकी वाणी ये सभी छाछ का पानी है। छाछ के पानी में जैसे घी नहीं रहता वैसे सतशब्द का भेद वेद,कुराण,अठरा पुराण,सिध्द साधुओंकी वाणियों मे नही है। इसलिए सभी योगियों ने त्याग करना,सत रखना,तप करना,मौन रखना,वेद,कुराण,पुराण की क्रिया करनी करना और सिध्द साधुओं की विधि अपनाना त्यागकर सतशब्द जिस साधू के पास है उनके शरण जाकर सभी देवो का देव ऐसा सतशब्द का भेद मिलाना चाहिए। ।।५।।

१८६

।। पदराग केदारा ।।

जुग मे सोई जन ऊतरे पार
जुग मे सोई जन ऊतरे पार ।।
ओर सकळ सब भाँड बिगवा ।। कियो भेष कूं खुवार ।। टेर ।।

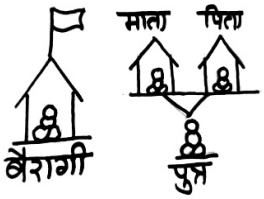

जगतमे जिन साधूओमें सतस्वरुप ब्रम्हज्ञान उपजा है वेही साधू भवसागर से पार उतरेंगे। अन्य कोई भी साधू भवसागर से पार नहीं उतरेंगे। साधू ब्रम्ह ज्ञान प्राप्त करनेके लिए कुल संसार त्यागते और तनपर बैरागी भेष धारण करते परंतु वैराग्य सतस्वरुपकी भक्ति नहीं करते उलटी कुल की याने इच्छा माता और पारब्रम्ह पिता की ही भक्ति करते इसप्रकार से

वैराग्य भेष को धारकर खराबी करते यह भेष धारण करके वैराग्य सतस्वरुप की भक्ति न करना यह साधू का झुठ मुठ का सोंग याने ढोंग धारण करना ऐसा है। ।।टेर।।

टिप– जैसे पुत्र ग्रहस्थी से निकलकर बैरागी बनने के लिए भेदी गुरु के पास गया बैरागी का भेष धारण किया परंतु वहाँ जाके भी वेद,व्याकरण न पढते,सुनते संसार किया याने माया का ही काम किया।

भगत सोई तन मन अरपे ।। जोगी निरदावे होय ।।
ओर भेष सब पेट भरणियाँ ।। जगत बिगाड़ी जोय ।। १ ।।

जिस भक्त ने रामजी के नाम पर तन,मन अर्पण किया है वे ही भक्त पार उतरेंगे। ये भक्त सिर्फ रामजी से संबंध रखते और जगत से कोई संबंध नहीं रखते। जो साधू पेट भरने के लिए भेष पहनकर साधू बनते वे ढोंगी है। उनमें धन कमाकर पेट भरने की शक्ति नहीं है पत्नी बच्चे पालन करने की ताकद नहीं है। इसलिए घर से भागकर पेट भरने के लिए साधू बनते। ढोंगी साधू ढोंग रचाकर जगत को पार उतरने से भूला देते ऐसे जगत के लोगो का अनमोल मनुष्य देह का कार्य बिघाड देते। ।।१।।

अड़द उड़द की डोर संभावे ।। चले पिछम की बाट ।।
बंक नाळ होय गढ पर चढियां ।। न्हावे त्रिगुटी घाट ।। २ ।।

सच्चे साधू आती–जाती साँस में राम राम करते और घट में उलटकर पश्चिम के रास्ते से याने बंकनाळ के रास्ते से त्रिगुटी गढपर चढते और त्रिगुटी में गंगा यमुना,सुषमना के संगम के घाट पर न्हाते। ।।२।।

सो जन गढ चड ध्यानज धरे ।। ऊपजे ब्रम्ह गिनान ।।
के सुखदेव सो जोगी बैरागी ।। ओर करम की खान ।। ३ ।।

ऐसे संत जो गड्पर चढकर सतस्वरुप ब्रम्ह का ध्यान करते उन्हें सतस्वरुप ब्रम्ह का ज्ञान कुद्रती उपजता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,यह साधू जगत में ग्रहस्थी है या वैरागी है यही अस्सल विज्ञान जोगी याने बैरागी है। इन्होंने होणकाळ माया त्यागी है और सतस्वरुप विज्ञान का भेष धारण किया है। ये साधू छोड्कर अन्य सभी साधू माया के कर्मो की खाण है। जीवों को काल मे फँसानेवाली जमात है। ।।३।।

१८८

।। पदराग सोरठ ।।

जुग मे अेक भ्रम हे भारी
जुग मे अेक भ्रम हे भारी ।।
ज्यां सूं सिष्ट सकळ पेदा व्हे ।। ब्रम्हा बिस्न सिव धारी ।। टेर ।।

संसार में एक भ्रम भारी है। जिस स्त्री से सारी सृष्टि बनी तथा जिस स्त्री को पत्नी करके ब्रम्हा,विष्णु,महादेवने धारण की ऐसे स्त्री को(माया)कर्म बताते। यह संसार में भारी भ्रम है। ।।टेर।।

कर्म गिणे सकळ सो बरते ।। छाने प्रगट सोई ।।
साहिब निमत उजागर होवे ।। दे नही सक्के कोई ।। १ ।।

सभी मनुष्य स्त्री संग को कर्म समझते परंतु कर्म समझनेवाले सभी स्त्री का संग करते। कोई प्रगट संग करते तो कोई छुपकर करते। साहेब निमित्त कोई उजागर होकर भक्ति करता तो उसे जगत के लोक स्त्री नहीं देते। ।।१।।

हिरा पन्ना मुंगिया देवे ।। अन्न जळ रस सब सारा ।।
सप्रस कूं कौ कान न मांडे ।। अेसा नेष्ट बिचारा ।। २ ।।

ऐसे हर के भक्त को हीरा देते,पन्ना देते मुंगीया देते,अन्न जल के अनेक रस देते परंतु स्पर्श करने को स्त्री देने को कोई भी कान नहीं देते,स्पर्श देने के बात को निच बात समझते। ।।२।।

के सुखराम जिकां हर चीन्यो ।। ज्यांरी दुबध्या भागे ।।
ओर सकळ तो सुर नर मूनि ।। लाय सकळ घर लागे ।। ३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जिसने हर पाया है उसकी स्त्री के चाहना की दुबध्या मिट गई है परंतु संसार के सभी मनुष्य,देवता,ऋषीमुनियों में स्त्री के चाहना की आग लगी है। ।।३।।

२००

।। पदराग कल्याण ।।

केवळ राम रटो मन मेरा
ज्यूँ तेरा पाप करम कट जावे ।। मिटे जनम जुग फेरा ।। टेर ।।

अरे मन,अरे जीव,केवळ राम का रटन कर। यह कैवल्य राम जीव को चौरासी लाख योनि में पटकनेवाले सभी पाप कर्म काट देता। इस कारण जीव के पिछे युगान युग से चौरासी लाख योनियों का जो आवागमन का फेरा लगा है वह फेरा सहज में मिट जाता ।।टेर।।

मन प्रतीत साच बिन आया ।। कारज सरे नही कोई ।।
कोट उपाव अनेक मनोरथ ।। कर देखो नर लोई ।। १ ।।

अरे मन,कैवल्य राम पे पूरा विश्वास आये बगैर यह पाप कर्म काटकर आवागमन का फेरा मिटाने का काम पूरा होता नही। कैवल्य राम रटनेके सिवा करोडों उपाय व अनेक मनोरथ करके देख लो। उससे आवागमन मिटाने का काम कभी पूरा होता नहीं ।।१।।

तीरथ कोट धाम बिन लेखे ।। जिग निनाणुं कीया ।।
शिंवरण साच नाँव बिन लेहेसे ।। सुख रती नहि लीया ।। २ ।।

अरे मन,अरे जीव कईयोने कड्क नियम पालकर करोडो बार अड्सठ के अड्सठ तीर्थ किए और कर रहे,देवताओं के,अवतारों के धाम बेहिसाब किए और कर रहे,निन्यान्नव याने अगणित यज्ञ किए और कर रहे परंतु इनमें से किसी को भी रत्तीभर भी सुख नहीं मिला। अरे मन,अरे जीव इन सभी ने कैवल्य राम पर विश्वास रखकर कैवल्य राम को रटा होता

तो इन सभी को सदा के लिए परम सुख मिलते ।।२।।

जत सत्त त्याग तप हर किरिया ।। बरत वास कर रोजा ।।
सासा भजन साच बिन आया ।। तन मन किणी न खोज्या ।। ३ ।।

अरे मन,अरे जीव जगत में कई जत रखते,सत्त रखते,तप करते,त्याग करते,व्रतवास करते, रोजा करते परंतु साँसो-साँस मे विश्वास रखकर केवल राम का भजन कर तन,मन कोई नही खोजते। इन साधको ने तन,मन खोजा होता तो इन सभी के तन,मनमें केवल राम प्रगट होता व इन सभी के चौरासी लाख योनि में पटकने वाले सभी पाप कर्म कट जाते।३।

बाणी बेद च्यार कंठ कीया ।। अरथ करे बोहो भारी ।।
अेकण नाँव बिना पच थाका ।। गया जनम सो हारी ।। ४ ।।

अरे मन,अरे जीव,कई साधकोने चारो वेद और वेदो के आधार की संतों की वाणियाँ कंठस्थ की और कर रहे। वेद और संतों के वाणियों के कली-कली का भारी अर्थ भी किया और कर रहे। इसप्रकार पचपचकर थक गए तथा थक रहे और अपना मनुष्य जन्म हार गए या हार रहे। ये ही साधक चारो वेद और संतो की वाणी कंठस्थ करने मे और अर्थ करने मे न पचते एक कैवल्य राम की विधि साधते थे तो मनुष्य तन का जन्म जीत जाते।।४।।

तीरथ धाम ग्यान सब सारा ।। नाँव सांच कूं कीया ।।
के सुखराम भटक पच समझो ।। भावे घर मांहि जीया ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी नर नारी को कहते है की,ये सभी तीर्थ,धाम ,यज्ञ,जत,सत,तप,क्रिया,व्रतवास,रोजे,वेद का ज्ञान केवळ राम नाम पर विश्वास लाने के लिए किए है इसलिए सभी नर-नारीयों तीर्थ एवम् धामो में भटकने के बाद और जप,तप, त्याग तप में पचने के बाद केवल राम रटने का समझो या इन विधियों में न पचते आज ही समझकर घर में बैठकर केवळ राम रटो ।।५।।

२१५

।। पदराग कानडा ।।

मै तो अेक सबद सत्त लिया

मै तो अेक सबद सत्त लिया ।। साझन आन छाड़ सब दीया ।। टेर ।।

मैंने सिर्फ सतशब्द धारण किया है। दूसरी ब्रम्हा,विष्णु,महादेव इन त्रिगुणी माया के सभी साधनाएँ त्याग दी है। ।।टेर।।

जे आ मुगत बेद पढ होवे ।। ब्रम्हा ध्यान करे क्या जोवे ।। १ ।।

अगर ये सतस्वरुप की मुक्ति बेद पढके तथा उसमें के जप,क्रिया करके होती थी तो वेद का रचयता ब्रम्हा सतशब्द का ध्यान क्यों करता?।।१।।

जे आ मुगत सिध के मांही ।। दाणुं भूत अगत क्यूँ जाई ।। २ ।।

अगर ये सतस्वरुप की मुक्ति सिध्द बनकर सिध्दाई प्राप्ती करने से होती थी तो राक्षस, भूत ये अगती में क्यों रहते थे?राक्षस में पूर्ण सिध्दाई कुद्रती ही रहती और भूत में चौथाई

सिध्दाई कुद्रती ही रहती फिर वे अगती में दु:ख भोगते क्यों पडे है? ।।२।।

करामात सुं जे गत पावे ।। मिनखा देहि देव क्यूँ चावे ।। ३ ।।

अगर करामात से परमपद की गती पाते थे तो ब्रम्हा,विष्णु,महादेव आदि सभी देवता मनुष्य देह की चाहना क्यो करते थे?उनके पास पर्चे चमत्कार करने की अनेक प्रकारकी करामात है। वे जानते है कि सतशब्द के बिना परमगती होती नहीं। परमगती सिर्फ सतशब्द से होती और वह सतशब्द मनुष्य देह के सिवा प्रगट होता नहीं इसलिए मनुष्य देह की वंछना करते ।।३।।

जे आ मुगत बोहोत बळ सारे ।। सेंसनाग क्युँ राम उचारे ।। ४ ।।

अगर परम मुक्ति बहुत बल से होती थी तो शेषनाग परमगती के लिए दो हजार जिभ्या से राम नाम का उच्चारन क्यों करता?उसमें तो बल पचास करोड योजन पृथ्वी अपने सिर के उपर बिना किसी कष्ट से सहज धारण करने का है। फिर उसको परमगती पाने के लिए रामनाम स्मरन क्यों करना पड रहा?।।४।।

केहे सुखराम परमपद न्यारा ।। सतगुरू के संग लेह बिचारा ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले परमपद पाने की विधि न्यारी है। वह विधि वेद पढने से,सिध्द बनने से,करामाती देवता बनने से या शेषनाग समान बलधारी बनने से नहीं मिलती। वह विधि सतगुरु का शरणा लेने से मिलती ।।५।।

२१७

।। पदराग ढाल ।।

में तुज बूझुँ ढुँड्यां

में तुज बूझुँ ढुँड्यां ।। मूवा जळ किम होय ।।

भेद बतायर चालियो ।। गुरू की सोगन तोय ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से जैन साधू ने कहाँ की, हम जो जल पिते है वह जल मृतक रहता है याने जगत के नर-नारी के काम का नहीं रहता है तब आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जैन साधू को पूछा की,जगत के नर-नारियों के काम में नहीं आता इसलिए जल मरता है यह कैसे हो सकता है?इसका भेद मुझे बताओ। जैन साधू जल कैसे मृतक होता है यह भेद न बताते क्रोध में आकर जाने लगता है तब उसे ज्ञान से सही समझे इसलिए उसे उसकेगुरु की सोगन देकर रुकवाते है। वह आगे ज्ञान चर्चा बढाते है(राजस्थान में गुरु को बहुत महत्व रहता है। गुरु की सोगन यह सबसे बडा अस्त्र होता है)।।टेर।।

पाप पुन्न बिन दोस सूं ।। किस बिध जीमे आण ।।

निकमो अन किम जायसी ।। सो मुज कहोनी बखाण ।। १ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को जैन साधू कहता है,हम जो अन्न खाते उसमें पुण्य नहीं रहता। यह अन्न जिसके घर में बना है,उनके जरुरत से अधिक होता है ऐसा बेकार किसी काम में न पडनेवाला अन्न रहता है। इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने

उसे पूछा कि,जीव के बिना अन्न नहीं बनता तो वह रसोई पाप के बिना नहीं बनी और रसोई बनाए बगैर मनुष्य खाना नहीं खा सकता मतलब भोजन के लिए बनाई हुयी रसोई बिना पाप की नहीं रहती। वह घर के लिए उनके जरुरत से अधिक है परंतु तुम छोड्के अन्य कोई भी खायेगा तो उसकी भुख मिटेगी या नहीं?जैसे घर को छोड्कर वही भोजन दुजे के क्षुधा शांती के काम आता वैसे तुम्हारे काम आया फिर वह अन्न निकम्मा कैसे हुआ? वह अन्न किसी काम में आ सकता मतलब निकम्मा नहीं हुआ। अगर निकम्मा नहीं तो उसमें का जीव मरने का पाप दोष नष्ट भी नहीं हुआ?फिर वह अन्न जो खायेगा उसे यह पाप दोष लगेगा ही लगेगा इसमें कोई फरक नहीं है यह ज्ञान से समझो। ।।१।।

तुं पीवे जिण नीर कूं ।। पावे बन कूं लाय ।।
वो फळ फूलां आवसी ।। कन वो निर्फळ जाय ।। २ ।।

हम मरा हुआ पानी मतलब किसीके काम में नहीं आनेवाला पानी पिते है ऐसा तुम कहते हो। अगर वह पानी मनुष्य जीवों को छोड्कर पेड पौधों के जीवों को दिया तो उन पेड पौधों की प्यास बुझेगी या नहीं?वह पानी पिनेसे पेड को जिंदा पेड के समान फल-फुल आएँगे या नहीं?या मरे हुए पेड के समान फल-फूल नहीं आएँगे ऐसा होंगा क्या?यह मुझे ज्ञान से समजाओ। अगर यह जल पेड-पौधे पिने से उन्हें फल-फूल आते है तो वह पानी निकम्मा कैसे हुआ?यह समझो। ।।२।।

तुज कूं देवे रोटियां ।। ज्याँ ने पुन कन पाप ।।
दोष कीसि बिध टाळ्या ।। ओ अरथ कीजे आप ।। ३ ।।

तुझे जो रोटियाँ देते है ऐसे रोटियाँ देनेवाले को पुण्य लगता है या पाप लगता है। अगर पुण्य लगता है तो यह दुजे को मतलब कर्म तुम्हारे उपर दोष के रुप में खडा हुआ फिर इस कर्म दोष को कैसा निर्दोष करोगे?इसकी समझ आप करो और मुझे समझाओं ।।३।।

मुख सूं झाळा नास मे ।। बहे इधक करूर ।।
मुख रोक्या सूं क्या भयो ।। जीव तुं हते जरूर ।। ४ ।।

तुम कहते हो की मुख से बाष्प छोड्ने पर सुक्ष्म जीव मरते है। इसलिए ऐसे गरम बाष्प को रोकने के लिए मुख को बांध लिया है और वही बाष्प नाक से छोडा है परंतु विज्ञान यह बताता है की नाक से बाष्प निकलती है वह बाष्प मुख के बाष्प से उष्ण रहता है मतलब जो बाष्प नाक से छोड्ते हो उस बाष्प से भी जीव तो निश्चित ही जरुर मरते है, फिर मुँह पट्टी बांधनेसे तुम्हारे देह से जीव का मरना कहाँ रुका?यह मुझे समझाओ। ।।४।।

वास किया सूं दोष रे ।। जे सुण उतरे जाय ।।
तो सिंघ जासी मोख ने ।। वो दिन तीसरे खाय ।। ५ ।।

तुम कहते हो की उपवास करने से जीव भवसागर के दोष से पार उतर जाता। ऐसा अगर है तो ज्ञान से समझो की सिंह कुद्रती ही हर तिसरे दिन खाता है,सहज में,बिना कष्ट से

उपवास करता है मतलब उपवास से पार उतरे जाता है तो सबके पहले सिंह सहज में भवसागर से पार हुआ रहता परंतु वैसा नहीं होता वह अगले योनि में पाप कर्म भोगने को ८४,००,००० योनि का एक शरीर धारण करता यह ज्ञान से समझ में लाओ ।।५।।

अे प्रपंच सब छाड दे ।। सिंवरो सिरजण हार ।।
केहे सुखदेव सुण ढुँड्या ।। ज्युँ तुम उतरे पार ।। ६ ।।

ये सभी चीजें ज्ञान से समझो और माया में रहने के ये सभी प्रपंच छोड दो और तुम्हें जिसने घडाया ऐसे सिरजनहार केवल का स्मरन करो। सिर्फ उसका स्मरन करने से ही तुम भवसागर से पार उतरोगे और कोई उपाय से पार नहीं होवोगे। उसका स्मरन करने से फिर कभी माया में नहीं जन्मोगे और सदा के लिए महानिर्वाण पद पर निश्चल रहोगे ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जैन साधू(ढुँढ्याँ)को ज्ञान से भाँती-भाँती से समझाया।। ।६।।

२५८

।। पदराग सोरठ ।।

पांडे अंत काळ काहाँ जावो
पांडे अंत काळ काहाँ जावो ।।
परण्या पीव छाड तुम दीया ।। अनवर आन मनावो ।। टेर ।।

अरे पंड्ति,तुम अंतकाळ में कहाँ जाओंगे?तुमने जिससे विवाह किया वह पति छोड दिया और जिनसे विवाह नहीं हुआ उनको पति समझकर मान रहा है। ।।टेर।।

सुरगुण कथो बोत बिध मीठो ।। सत रूप बणावो ।।
बोहो आचार आँख मे अंजन ।। दुनियाँ ठग ठग खावो ।। १ ।।

अरे पंड्ति,तू मिठे बोली में सर्गुण कथा बोलता है और कथा बोलते वक्त सुंदर दिखे ऐसा रुप बनाता। अनेक तरह के आचरण करके लोगो के आँखो में भ्रम की धुल फेकता है। जगत को शादी का पति रामजी न बताते बिना शादी के अन्य देवता भजने को बताता है। ऐसा दुनिया को ठग ठग कर पेट भरता। ।।१।।

जिण या देहे ज्यान सब कीवी ।। नख चख सरब बणाया ।।
तां को नाँव छिपावो बांभणा ।। आन यार बोहो गाया ।। २ ।।

जिस ने यह तेरी देह और जगत बनाई, तेरा नख चख सब बणाया अरे ब्राम्हण,उसका नाम छुपाता है और भेरु भोपा इन देवताओंको भजना सिखाता है तो तू अंतकाल में कहाँ जायेगा?।।२।।

तुम तो बुहा जात हो पांडे ।। दुनिया सरब बुहाई ।।
के सुखराम पीव कूं छाड्र ।। पतबरता कूण कवाई ।। ३ ।।

अरे पंड्ति,तू तो डुबा जा रहा है परंतु दुनिया को भी तेरे साथ डुबा रहा है। अरे पंड्ति,पति को त्यागकर बिना शादी के पुरुष मनाना ऐसे स्त्री को पतिव्रता कौन कहेगा?अरे पंड्ति,ऐसे ही रामजी को त्यागकर भेरु भोपा को भजता तो तुझे अंतकाल में रामजी अपने घर कैसे

ले जायेगा?।।३।।

२६१

।। पदराग कानडा ।।

पांडे अेक सबद सत्त लीजे

पांडे अेक सबद सत्त लीजे ।। बदले बेद भेद के दीजे ।। टेर ।।

अरे पंडित,तू सतशब्द सिर्फ धारण कर। सतशब्द के बदले ये वेद,भेद और वेद, भेद समान ज्ञान,ध्यान,क्रिया कर्म सभी त्याग दे ।।।टेर।।

पीपे सुं हाजर हुय रेती ।। परसण हुय नित्त दरसण देती ।। १ ।।

अरे पंडित,तू जिस देवी की पूजा करता है वह देवी पीपा से हाजीर होकर रहती थी। हर दिन पीपा पर प्रसन्न होकर दर्शन देती थी। यह पीपा पहले राजा था बाद मे वह ने:अंछरी संत बना।(एक बार पीपा के पास कुछ संत आए,तब पीपा ने,उन संतो का आदर-सत्कार करके,उन संतो को भोजन करने के लिए कहा। उन संतो को सबसे पहले,भोजन करने के लिए बैठाया। संत खाने बैठ जाने पर,ग्रास लेते समय,भोजन की आज्ञा चाहिए,ऐसा वे संत,अपनी रीति के प्रमाण से भोजन शुरु करने आज्ञा चाहिए,ऐसा पीपा जी से बोले । तब पीपा बोला की,आज्ञा माता की(देवी की)। यह माता की आज्ञा सुनकर,संतो को बुरा लगा उन्हें ऐसे बुरा लगा कि,हम तो ब्रम्ह के भक्त है(और अन्य देवो के या देवी के विरुद्ध हैं)और इसने माता के नाम से,माता को भोग लगाओ ऐसा कहा। यह देवी को भोग लगाया हुआ अन्न,हम कैसे खायें?ऐसा सोचकर,उन्हींमें से एक संत ने कहा कि,तुम्हारी देवी को हम लात मारते और आज्ञा तो,अपने नाथ की लेते और रसोई दाल भात की,ऐसा एक साधू ने कहा- **देवी के मारु लात की ,आज्ञा म्हारा नाथ की, रसोई दाल भात की** ' इस तरह से बोले और साधू भोजन करने लगे। पीपाजी ने रसोई,चुरमा की बनवायी थी, परंतु वह संतो के कहे जैसा,चुरमा का,दाल भात हो गया। देवी के भक्त बहुतेक विशेषत, देवी को चुरमे का भोग लगाते है,वैसे ही पीपाजी ने भी,चुरमा बनवाया था परंतु उस चुरमें का,दाल भात बन गया,वह दाल भात का भोग,पीपाजी देवी के लिए,मंदिर में ले गया,तो मंदिर में देखता है,क्या,कि देवी की कमर टूटी हुई देवी पडी है,पीपाजी ने देवी से पूछा कि,माता जी,ऐसे क्यों गिरी पडी हो?देवी ने कहा,कि,आज तुम्हारे यहाँ आए हुए संतो ने,मेरी कमर पर लात मारी,इसलिए मेरी कमर टूट गई। तुम मेरे लिए जो नैवेद्य लाये हो,वह चुरमा नहीं,दाल भात हो गया, तब पीपाजी बोले,वे संत,तुम्हारी अपेक्षा,जबर है क्या?देवी बोली,हाँ वे मेरी अपेक्षा जबर है,तब पीपाजी बोले,कि,फिर अब मैं तेरी सेवा करके,क्या करुँगा?ऐसा देवी से कहकर,पीपाजी लौट आए और संतोंके शिष्य बन गए।)।।१।।

माता सेव मुगत जो पावे ।। पीपो छोड़ राम क्युँ ध्यावे ।। २ ।।

माता की भक्ति करने से परममुक्ति मिलती थी,तो पीपा देवी माता को छोड्कर रामनाम का स्मरन क्यों करता। ।।२।।

सिव सिव भज्या भरम भै भांजे ।। तो संकर ध्यान कोण को साजे ।। ३ ।।

सिव सिव इस नाम का भजन करने से भ्रम नष्ट होता है और काल का डर भागता है तो शंकर किसका ध्यान कर रहा है?सतशब्द का कर रहा है या और किसीका ध्यान कर रहा है?।।३।।

सुरगुण सेव परम पद पावे ।। तो राम किसन क्यूँ ब्रम्ह ध्यावे ।। ४ ।।

सरगुण भक्ति से परमपद मिलता है तो सतोगुणी विष्णु के अवतार रामचंद्र,कृष्ण ने सतस्वरुप ब्रम्ह की क्यों आराधना की?।।४।।

कह सुखराम सुणो सब कोई ।। ब्रम्ह बिना सब माया होई ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज पंडित और सभी नर–नारी को बोले कि,एक सतब्रम्ह के अलावा दूसरी सभी सारी चिजें माया है,काल का चारा है। इसलिए अरे पंडित,तू सतशब्द सिर्फ धारन कर और अन्य सभी माया के धर्म त्याग। ।।५।।

२६६

।। पदराग दीपचन्दी ।।

पांडे पाखंड काय चलावो

पांडे पाखंड काय चलावो ।।

सत्त शव्द बिन मुक्त न व्हेली ।। कै बळ हुन्नर ल्यावो ।। टेर ।।

अरे पंडित,तुम सत्तशब्द के सिवा अन्य विधि से परममुक्ति होती यह पाखंड,यह झुठ संसार में क्यों फैलाते हो?अरे पंडित,सत्तशब्द बिना परममुक्ति नहीं होती अन्य करणियों का,हुन्नरो का कितना भी बल लगाया,तो भी सत्तशब्द बिना किसीकी भी मुक्ति नहीं होती। ।।टेर।।

अेकी ब्रम्ह ओर नही कोई ।। तम दुबद्या बतलाई ।।

मै बूजत हुं ग्यान बिचारी ।। भिन कहाँ सुं आई ।। १ ।।

सतस्वरुप ब्रम्ह आदि से एक ही है दुजी है वह माया है सतस्वरुप ब्रम्ह नहीं है। सतस्वरुप ब्रम्ह से मोक्ष होता,माया से मोक्ष होता नहीं फिर भी तुमने सतस्वरुप ब्रम्ह के समान ही माया से भी मोक्ष होता यह भ्रम जगत में फैलाया। हे पंडित,मैं सत्तज्ञान से बिचार कर तुझसे पूछ्ता हूँ की,सतस्वरुप से भिन्न ऐसे माया से परममुक्ति होती है यह तुझमें ज्ञान कहाँ से आया? ।।१।।

क्रिया करम करो बोहो भांती ।। चोका नित दिरावो ।।

अन बिना भूक जो जावे ।। नाव बिना गत पावो ।। २ ।।

रसोई घर में शुध्दता के आचार क्रिया कर्म बहुत पालते है,चोका नित्य देते है सिर्फ यह करने से किसीकी भुख नहीं जाती। भूख तो भोजन करने से जाती। ऐसे ही चौसट के चौसट शुध्द लक्षण पालते हो पर नाम नहीं भजते हो तो नाम बिना परम गती कैसे होती? ।।२।।

कर सो बाड़ करे बोहो गाढी ।। खेत बीज बिन बावे ।।

जे वो आण भरे घर कोठा ।। मोख नांव बिन जावे ।। ३ ।।

किसान खेत के चारो ओर मजबूत बाड लगाता,खेत घास घुससे साफ सुत्रा करता और खेत में बिज डालता नहीं तो इससे उस किसान के अनाज की फसल नहीं उगती और अनाज न उगने कारण किसान घर पर, कोठे में अनाज लाकर नहीं भर सकता ऐसे ही घट में रामनाम उगाये बिना मोक्ष में नहीं जाते आता। ।।३।।

गेणो पेर सेज सिणगारे ।। साज सकळ बिध सारी ।।
नांव बिना किरिया सब करणी ।। पुरष बिना ज्यूँ नारी ।। ४ ।।

कोई स्त्री,गहने पहनकर सभी शृगांर कर कर और पलंग अच्छी तरह से सजाकर पति के बिना पलंग पर सोई तो उसे जैसा पति का सुख नहीं मिलता वैसेही नाम बिना सभी माया कि करणियाँ है। इसमें साहेब न होनेकारण हंस को साहेब का सुख नहीं मिलता। ।।४।।

बिध आचार सकळ ले किरिया ।। देहे को रूप कहावे ।।
जन सुखराम जीव का संगी ।। नाँव सकळ रिष गावे ।। ५ ।।

यह सारी आचार क्रिया की विधियाँ देह को सुखरुप बनाने की क्रिया है। जीव को सुखरुप बनाने की नहीं है जीव का संगी सिर्फ निकेवल नाम है उसीसे जीव को काल से मुक्ति मिलती है ऐसा सभी ऋषीमुनी अपने अपने ज्ञान में गाते है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है। ।।५।।

२६७

।। पदराग कानडा ।।

पांडे समज चेत हुय भाई
पांडे समज चेत हुय भाई ।। सो सुण ब्रम्ह बाप बिन माई ।। टेर ।।

अरे पंडित,मैं कहता हूँ उसे समझ और समझकर होशियार हो। वह सतस्वरुप ब्रम्ह को कोई माँ,बाप नहीं है। रामचंद्र,कृष्ण और ब्रम्हा,विष्णु,महादेव को माँ बाप है इसलिए ब्रम्हा,विष्णु, महादेव ये जन्मी हुई माया है,ये सतस्वरुप ब्रम्ह नहीं है। ।।टेर।।

तां के मात पिता कुळ सारा ।। सो सब माया रूप पसारा ।। १ ।।

रामचंद्र,कृष्ण आदि को हमारे सरीखे माता,पिता,कुल है। ये सभी जन्मे है इसलिए ये सतस्वरुप ब्रम्ह नहीं है ये हमारी सरीखी माया है। रामचंद्र को दशरथ पिता और कौशल्या माता थी। कृष्ण को वासुदेव पिता और देवकी माता थी। दोनो का कुल परिवार था ये सब माया का पसारा है ऐसे सतस्वरुप ब्रम्ह को कोई माता,पिता या कुल परिवार नहीं है। ।।१।।

अंछया फूल अस्तरी ठाणो ।। तीनु जनम सगत मे जाणो ।। २ ।।

जगत में जैसे स्त्री से पुत्र-पुत्री जन्मते वैसेही इच्छा याने शक्ति स्त्री से ब्रम्हा,विष्णु,महादेव जन्में है इसलिए ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ये सतस्वरुप ब्रम्ह नहीं है,यह काल के मुख की माया है। ।।२।।

तीनु जाग ऊपजे सोई ।। माया हे नहि ब्रम्ह बिचारो कोई ।। ३ ।।

ये तीनो ब्रम्हा,विष्णु,महादेव संसार में शक्ति माता से उपजे इसलिए ये माया है। ये सतस्वरुप

ब्रम्ह है करके कोई विचार मत करो। ।।३।।

जळ बिन कीच धुपे नी कोई ।। सुरगुण सेव मोख नही होई ।। ४ ।।

पानी के बिना किचड धोया नहीं जाता इसीप्रकार रजोगुण ब्रम्हा,सतोगुण विष्णु,तमोगुण शंकर इस माया से मोक्ष में पहुँचते नहीं आता। यह सरगुण याने गुणोंकी भक्ति है,त्रिगुणी माया की भक्ति है। यह सतस्वरुप ब्रम्ह की भक्ति नहीं है इसकारण ब्रम्हा,विष्णु,महादेव से कोई मोक्ष में नहीं जाता। ।।४।।

पांड्या देव सगत ने जाया ।। दत्तब काज भुगत ने आया ।। ५ ।।

अरे पंड्ति,ये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव इन्हें शक्ति ने जन्म दिया। ये अपने पुर्व संचित के कारण सभी जगत के नर–नारी समान कर्म भोगने के लिए जगत में आए है। ।।५।।

दत्तब सारूं हे परकासा ।। दिपक चंद सूर की आसा ।। ६ ।।

ये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव और सभी नर–नारी अपने अपने पूर्व संचित के प्रमाण से प्रकाशित कम जादा दिखते है। जैसे सुरज,चाँद और दिपक का प्रकाश अलग अलग कुवत का कम–जादा होता ऐसेही ब्रम्हा,विष्णु,महादेव और नर–नारी के पराक्रम में फरक रहता। ।।६।।

केहे सुखराम समझ रे पांडे ।। बिना ब्रम्ह माया के भांडे ।। ७ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अरे पंड्ति,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,अवतार ये सभी ब्रम्ह नहीं है। ये माया के बरतन है, इनके साथ मोक्ष नहीं है । ।।७।।

२६८

।। पदराग भेरू (प्रभाती) ।।

पांडे समज सिंवर हळ सांई ।।
पांडे समज सिंवर हळ सांई ।।
बिना भजन जुग परळे जावे ।। पडे. कूप भो माही ।।
निराकार निरधार सबद कूं ।। खोजो या तन मांही ।। टेर ।।

अरे पंड्ति,तू समझकर बिना विलंब स्वामी का स्मरन कर। राम भजन किए बगैर ये सारा जगत भवसागर के बडे कुएँ में याने डोह में पड्ते। जो निराधार,निराकार शब्द का भेद लेते, वे ही भवसागर में डुबनेसे बचते अगर तुझे भवसागर में गिरनेसे बचना है तो राम स्मरन कर और घट में राम खोज। ।।टेर।।

जे आ मुगत बेद मे होती ।। सुखदेव कहो क्युँ त्याग्या ।।
ता कें घरे पुराण अठारे ।। फेर पढण की जाग्या ।। १ ।।

तु वेदो की शोभा करता। यदि इन वेदों में परममुक्ति होती थी तो सुखदेव मुनी वेदो का त्याग करके बन में क्यों गया?सुखदेव के घर में तो वेद,अठरा पुराण सभी थे और उसके घर में वेद,पुराण पढने की पाठशाला भी थी, सब बडे–बडे ऋषीमुनी उसके घर वेदव्यास के पास वेद अध्ययन करने के लिए आते थे,फिर ऐसे वेद पुराण के ज्ञानी घर का त्यागकर सुखदेव बन में क्यों गया?।।१।।

संक्राचारज आगली केंता ।। पाछे सबे बताया ।।
जे आ मुगत बेद मे होती ।। दत्त पास क्युँ आया ।। २ ।।

जगत के सभी लोग ज्ञानी,ध्यानी भूत में घटी हुई घटना बताते है परंतु शंकराचार्य भविष्य में होनेवाली घटना बताते थे। शंकराचार्य वैदिक ज्ञान में निपुण थे अगर यह परममुक्ति वेद में होती तो शंकराचार्य परममुक्ति पाने के लिए दत्तात्रय के पास क्यों गया ?।।२।।

राज पाट सुख संपत माही ।। जे ओ मोख फळ पावे ।।
स्हेर उजीणी त्याग भरथरी ।। बनरोई क्युँ जावे ।। ३ ।।

राज पाट,सम्पती में मोक्ष फल मिलता तो भरथरी राजा उज्जेन शहर त्यागकर बन में क्यों जाता?।।३।।

करामात कर तूत सिधाई ।। जे यामे हर सूजे ।।
राम सरीसा को बळवंता ।। बासट कूं क्या बूजे ।। ४ ।।

करामात,कर्तुत,सिध्दाई इन में हर दिखाई दिया होता था,रामचंद करामात,कर्तुत,सिध्दाई में बलवान था। रावण तो तीन लोक में किसी से मारे नहीं जाता था ऐसे रावण को रामचंद्र ने मारा,फिर ऐसा बलवान रामचंद्र वशिष्ठ मुनी के पास क्या पूछने गया? ।।४।।

जाजंळ रिषी बोत तप कीया ।। पवन गिगन चडाया ।।
जे आ मुगत जोग मे होती ।। तुळपे क्युं चल आया ।। ५ ।।

जांजुळी(नरोत्तम)ऋषी ने बहुत तपस्या की। उसने अपना साँस भृगुटी में चढाकर अनेक युग समाधी में रहे। समाधी के कालखंड में पंछियों ने उनकी जटा में घोसला करके अंडे रखे थे। यदि यह परममुक्ति योग से हुई होती तो जांजुली ऋषी की हुई होती। फिर जांजुली ऋषी तुलाधर के घर परममुक्ति का भेद पूछने क्यों गया?।।५।।

षट क्रिया आचार बिचार ।। जे यामे हर पावे ।।
व्यास सरीसा को कुण हूवा ।। नारद पे क्यूँ जावें ।। ६ ।।

षटक्रिया याने नेती,धोती,कपाली,नवली,बस्ती आदी आचार-विचार,यदि इसमें हर मिलता,तो वेद व्यास जैसा कौन हुआ होता,यह बताओ?फिर वेद व्यास,नारद के पास किस लिए गया? ।।६।।

त्याग जत्त करणी बो कसिया ।। जे यामें पद सूजे ।।
लछमण सा जुग को कुण त्यागी ।। सीता कूं क्या बूजे ।। ७ ।।

त्यागन,जत्त याने ब्रम्हचर्य कसकर पालनेसे परमपद सुजता है तो लक्ष्मण के समान संसार में कौन जती,त्यागी था(लक्ष्मण ने चौदह साल निंद नहीं ली और कुछ खाया नहीं,चौदह वर्ष तक,किसी भी स्त्री का,मुँह देखा नहीं। खुद सीता,बारह वर्ष तक संग रही,उसके पैरो के सिवा ,जानकी का मुँह कभी लक्ष्मण ने देखा नहीं और जमिन पर पीठ लगाकर चौदह वर्ष तक सोया नहीं)तो इस लक्ष्मण जैसा,इस जगत में कौन त्यागी है,फिर उस लक्ष्मण ने,सीता से क्या ज्ञान पूछा?।।७।।

जती त्याग क्रिया हर जोगी || बेद राज सुख सारा ||
केहे सुखराम सुणो सब कोई || सत्त सबद हे न्यारा || ८ ||

जती,त्यागी,क्रिया करना,जोग करना वेद पठण करना,सुख लेते राजपाठ करना इनसे भवसागर पार नहीं होता। भवसागर पार तो सिर्फ सतशब्द से होता इसलिए सतशब्द इन सभी करणियों से न्यारा है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। |||८||

२७०

|| पदराग सोरठ ||

पांडे समज्या युं तत्त धारे
पांडे समज्या युं तत्त धारे ||
पाहेण सेवे जड हे माया || तां कूं दूर बिडारे || टेर ||

अरे पंडित,जो सत्तज्ञान समझते है वे तत्त धारण करते। जो पत्थर की मुर्तियाँ सरीखी जड माया पूजते उनको तत्तज्ञान समझा नहीं इसलिए तत्त को दूर करते। ||टेर||

अेक नार की नकल बणाई || अेक असल सो आवे ||
अण समज के दोनु सरभर || समज्या सागे चावे || १ ||

एक अस्सल नारी है और एक नारी का पुतला है मुर्ख को दोनो सरीखे दिखते परंतु जिसे नारी का सुख समझता वह अस्सल नारी को चाहता वह पुतले को कभी नहीं चाहता ऐसे ही जिसे तत्त का सुख समझता वह तत्त को चाहता,पत्थर के मुर्ति को नहीं चाहता। ||१||

कुवेकी अेक नकल बणाई || अेक असल सो किया ||
पिणियाऱ्यां की भीड़ किसे पर || प्यासे कहाँ चित दीया || २ ||

एक जमीन को खोद के बनाया हुआ अस्सल कुआँ है और एक कुएँ का चित्र है। पानी भरने वाले औरतों की कहाँ भिड रहेगी?और जिसे प्यास लगी है ऐसा प्यासा कहाँ चित देगा? ऐसे ही अरे पंडित,सत्तज्ञान से समझ वैसेही चलता फिरता सतगुरु पूज और पत्थर की मुर्ति पूजना त्याग। ||२||

गाबा घाल बणायो ओदर || अेक मास नव जावे ||
के सुखराम ख्याल हे वां को || दूजी पूत्र खिलावे || ३ ||

एक स्त्री अपने पेट पर नौ मास के गर्भवती स्त्री के समान गर्भवती का चोला पहनती और एक के पेट में नौ मास का गर्भ है। जो पेट पर गर्भवती का चोला पहनती उसका वह खेल है उसके पेट में बालक नहीं है इसकारण वह बालक को खेलाए नहीं पाएगी परंतु दुजे स्त्री के पेट में अस्सल बालक है। वह बालक को जन्म देगी और बालक को खेलायेगी ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज पंडित को बोले। ||३||

२७७

|| पदराग सोरठ ||

पिंडता भूल दोनुं घर मांही

पिंडता भूल दोनुं घर मांही ।।

हिंदु तुरक जाय दोऊँ ऊजड़ ।। सतशब्द गम नाँही ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,कि,अरे पंडीत,यह भूल दोनो घर(हिन्दू और मुसलमान),इन दोनो घरों मे भूल है। हिन्दू और मुसलमान ये दोनो ही उजड़(बिना रास्ते के रास्ते से)जा रहे है।(इन दोनो को भी)इस सतशब्द की गम(जानकारी)नहीं है। ।।टेर।।

हिंदु बरतं तीरथाँ भरम्याँ ।। मुसलमान कर रोजा ।।

याँ थापी वाहाँ सरब उथापी ।। तन मन किणी न खोजा ।। १ ।।

हिन्दू व्रत(उपवास) और तीर्थ करके,भ्रमित हुए और मुसलमान रोजा करके भ्रमित हुए।(व्रत और रोजा,इन दोनो में उपवास करना पड़ता है।)इन हिन्दू लोगो ने जो स्थापीत किया,उस सभी की मुसलमान लोगों ने उलटकर खण्डन किया,परन्तु शरीर की और मन की कोई(हिन्दू और मुसलमान)दोनो ने भी खोज नहीं की। ।।१।।

भेष बणाय हुवा षटदर्शण ।। पढ पढ पिंडत काजी ।।

सोन्नत कर कर हुवा तुरकिया ।। राम किसे सूं राजी ।। २ ।।

(ये शरीर पर अपना-अपना,अलग-अलग)भेष बनाकर,छ:दर्शन(कान मे मुद्रा पहनकर,योगी बने। गले मे लिंग बाँधकर,जंगम बने। सिर के बाल उखाड़कर और मुँखपर पट्टी बाँधकर,सेवड़े बने। यज्ञोपवीत और शिखा निकालकर और यज्ञोपवीत तथा शिखा का हवन करके, संन्यासी बने। सुन्नत करके फकीर बने और यज्ञोपवीत तथा शिखा रखकर ब्राम्हण बने।)ऐसे ये अलग-अलग भेष धारण करके,छ:दर्शन बने। बहुत विद्या सीखकर पंडित हुए और इलम पढ़कर,काजी बने तथा सुन्नत करके,तुर्क(मुसलमान)हुए(तो भी इन सभी की बातों मे से), राम किसकी बातों से राजी(खुश)होता है? ।।।२।।

हिंदु पुरब दिसा कूं बंदे ।। तुरक पिछम कूं भाई ।।

वे जाळे वे गड़े जमी मे ।। सत राह किण पाई ।। ३ ।।

इसी तरह हिन्दू पुरब दिशा की तरफ(मुँख करके),बन्दना करते है और तुर्क(यवन)पश्चिमें दिशा की तरफ(मुँख करके)नमाज पढ़ते है। हिन्दू अपने मुर्दे को जलाते है और मुसलमान अपने मुर्दे को जमीन में गाड़ते है,तो इन दोनो में से सच्ची राह किसने पायी है? ।। ३ ।।

हिंदु खरच बारवो थापे ।। तुरक चाळीसो खावे ।।

के सुखराम सुणो सब ग्यानी ।। अरथ किसे को आवे ।। ४ ।।

हिंदू के मरने पर बारहवे दिन उसका श्राद्ध करके लोग भोज करते है और मुसलमान मरने पर मुसलमान लोग उसके चालीसवें दिन,चालीसा खाते है।(साधू और सभी भेषधारी मरने वाले के बाद मे,सतरहवें दिन,सतरहवी खाते है और सभी भेषधारी मिलकर खाते है।)आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,कि,सभी ज्ञानियों सुनो।(हिंदुओं और मुसलमानों ने जो-जो किया,वह किसके काम में आया इनमें किसी के भी काम में आया हो,तो वह

बताओ।) ।। ४ ।।

२७८

।। पदराग गुड ।।

पिया मै भूली हो

पिया मै भूली हो ।।

मेरे सतगुरू ली सुळझाय ।। पिया मै भूली थी ।। टेर ।।

हे मालिक,मैं आपको भूल गई। मुझे मेरे सतगुरु ने भ्रम के उलझनो से निकालकर सुलझा दिया तब मैं आपको मेरे अंतर आत्मा में पाई। ।।टेर।।

सतगुरू भेव बताविया प्रभु ।। अंतर आतम राम ।।

भेद बिना बोहो भटकिया हो ।। पूज्या बायर धाम ।। १ ।।

हे प्रभू,मेरे सतगुरु ने आपको पाने का भेद दिया तब मैंने मेरे अंतर में ही हे आत्मा के राम, आपको पाया। आत्मा में ही परमात्मा है यह जब तक भेद नहीं था तब तक मैंने परमात्मा को बाहर बहुत ढुँढा। मैं चारो धाम घुमा,छत्री,चबुतरे पूज रहा परंतु मुझे कही परमात्मा नहीं मिला। ।।१।।

पत्थर बोहो बिध खोलिया प्रभू ।। लीया मुज उठाय ।।

समरथ सतगुरू बायरो प्रभू ।। सब जुग बूहो जाय ।। २ ।।

हे प्रभू,मैंने जगह जगह जाकर पत्थर की मुर्तियाँ धोई और वह जल चरणामृत करके पिया परंतु मुझे घट में परमात्मा नहीं मिले। मेरे सतगुरु ने उन भ्रमोंसे मुझे निकालकर मेरे अंतर में ही आत्मा का राम परमात्मा प्रगट कर दिया आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है समर्थ सतगुरु मिले बिना सारा संसार बहता जा रहा है । ।।२।।

बेद कतेब पारसी प्रभू ।। पढिये सुणये जोय ।।

दम तूटे ग्रह ठका प्रभू ।। मुगत कहाती होय ।। ३ ।।

हे प्रभु,मैंने हिंदु के वेद,मुसलमानो का कुराण और फारसी के ग्रंथ पढे,सुने और देखे परंतु अंतर में परमात्मा कभी नहीं मिला। ग्रहस्थी में साँस कम होते फिर भी मुक्ति पाने के लिए ग्रहस्थी बनकर अनेक भक्तियाँ मैंने की,ग्रहस्थी जीवन में मेरे साँस टुटे परंतु मुक्ति नहीं मिली। ।।३।।

तीरथ कूं बोहो भटकिये हो ।। पावे दु:ख अपार ।।

ज्हाँ जावे जळ पाण हे प्रभू ।। दूजो नहि बिचार ।। ४ ।।

हे प्रभु,मैं तिरथों में बहुत भटका वहाँ अपार दु:ख पाए। जहाँ गया वहाँ जल और पत्थर ही दिखे,परंतु परमात्मा कही नहीं दिखा। परमात्मा मेरे सतगुरु ने घट में आत्मा में ही दिखाया। ।।४।।

बरत वास उपासणा प्रभू ।। आतम कसे अपार ।।

बाण बिना कबाण कूं प्रभू ।। क्या कस पाडण हार ।। ५ ।।

हे प्रभु,मैंने व्रतवास,उपवास पाँचो आत्मा को कष्ट दे-देकर बहुत किए परंतु परमात्मा कही पर नहीं मिला। जैसे धनुष्य है परंतु बाण नहीं है,उस धनुष्य को खिचके शत्रु को मार नहीं गिराते आता ऐसे ही प्रभु पाने का भेद नहीं और देह को बहुत कसा तो अंतर में रमनेवाला परमात्मा नहीं मिलेगा। ।।५।।

उळझे कूं सुळझावियो हो ।। सतगुरू समरथ आय ।।
सुखियाँ सांई पाविया हो ।। अंतर आतम मांय ।। ६ ।।

इसप्रकार मैं सभी भक्तियाँ,करणियाँ,धर्म में बहुत उलझा था। इन उलझनोसे मेरे समर्थ सतगुरुने मुझे निकाला और ज्ञान से सुलझाकर घट में ही परमात्मा है यह समझाया। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,समर्थ सतगुरु के भेद से साँई मुझे अंतर में ही आत्मा में प्राप्त हुए।।६।।

३११

।। पदराग कल्याण ।।

साधो भाई भेद बिना जुग डोले
साधो भाई भेद बिना जुग डोले ।।
सतगुरू बिनाँ भेद नहि सूजे ।। ता तेई मिथ्या बोले ।। टेर ।।

साधो भाई,रामजी तारता यह तिरने का भेद जगत को मालुम नहीं इसलिए जगत तिरथ,बन, कथा आदी मे फिरता। रामजी तारता यह भेद सतगुरु के सिवा सुझता नहीं इसलिए तीर्थ में जाना,बन में जाना यह मोक्ष में जाने के लिए झूठा होने पर भी सच्चा समझते। ।।टेर।।

तीरथ जाय समझ ज्याँहाँ लावे ।। सो घर में नर धारे ।।
रमता राम ज्याहाँ त्याहाँ पूरण ।। समज्या ज्याहाँ हर तारे ।। १ ।।

जगत के लोग तिर्थो में जाकर रामजी तारते यह समझ घट में लाते। यही समझ घर में ही बैठे-बैठे लाते थे तो तिरने को समय नहीं लगता। रमता रामजी जहाँ तहाँ तारने के लिए पूर्ण है। जहाँ उसे समझ जाओंगें, वहाँ वह तार देगा,फिर तीर्थ और घर का कोई कारण नहीं रहेगा ।।१।।

अे घर छाड़ बना कूं जावे ।। बडे गुफा मे कोई ।।
वो सुण मत घर हि में लावे ।। तो तिरता बार न होई ।। २ ।।

ये ज्ञानी,ध्यानी घर त्यागकर तिरने के लिए बन में जाते है। पहाड के बडे गुफा में ध्यान लगा के बैठते है। वहाँ जाकर रामजी तारता यह मत घट में लाते। वही मत घर में लाते थे तो तिरने में देर नहीं लगती। ।।२।।

ब्याक्रण साझ भागवत बाचे ।। अरथ करे जे भारी ।।
वाँ को मूळ पढे जे घट मे ।। देहत काळ कूं मारी ।। ३ ।।

व्याकरण सिखते,भागवत पढते और उसका भारी-भारी अर्थ करते है। उस व्याकरण,भागवत का मुळ रामजी है। यह घर में ही घट में समज लेते थे,तो देह है जब तक ही काल को

मारके उन्हें भवसागर तिरने में देर नहीं लगती थी। ।।३।।

के सुखराम समझ को कारण ।। जाग ठाम को नाही ।।
ज्याँ सुण नाम साच घट आयो ।। तिरतां बार न कांही ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,तिरने की समझ आनी चाहिए। तिरने के लिए घर या तीर्थ या बन यह कोई कारण नहीं। जिसके घट में रामनाम यही तार सकता यह विश्वास हो जाता उसे तिरने के लिए देर नहीं लगती। ।।४।।

३१५

।। पदराग कल्याण ।।

साधो भाई राम भजन बिना झूठा
साधो भाई राम भजन बिना झूठा ।।
करणी सकळ नांव बिन अेसी ।। ज्यूँ कालर मेहे बूठा ।। टेर ।।

साधो भाई,राम भजन सिवा मस्त मन में रहना या तन सुकाना ये करणियाँ नाम प्रगट करने के लिए झूठी है याने मोक्ष पाने के लिए झूठी है। ये सभी करणियाँ बिना उपजाऊ जमीन पर बारीश गीराने सरीखी है। बिन उपजाऊ जमीन पर कितनी भी बारीश गिराई तो भी एक अनाज का पेड नहीं उगता उसी तरह राम भजन के सिवा ये सभी करणियाँ कितनी भी की तो भी घट में ने:अंछर नाम जरासा भी प्रगट नहीं होता। ।।टेर।।

अे तो अेक अनेका जागा ।। गुरू गम बिन नही पावे ।।
आपो भूल भरम मे बंधिया ।। भटकत जनम गमावे ।। १ ।।

यह मोक्ष देनेवाला कर्ता माया के करणियों के समान अनेक नहीं है सिर्फ एक है फिर भी सभी जगह ओतप्रोत व्यापक है। वह हर किसी के घट में ओतप्रोत व्यापक है। ऐसा घट में होने के पश्चात भी गुरु के कृपा बिना यह कर्ता नहीं मिलता। जीव को सत्तज्ञान न होने कारण जीव में मैं ब्रम्ह हुँ मैं मन,पाँच आत्मा यह माया नहीं हुँ यह भुल पड्ती और मैं मन और पाँच आत्मा हूँ यह भ्रम उपजता इसकारण जीव मन और पाँच आत्मा के विषय वासनाओंके रसो के लिए ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,अवतार आदि त्रिगुणी माया में भटक कर अपना अनमोल मनुष्य देह गमा देता। ।।१।।

किस्तुरी मिरग बन ढूँढे ।। पाटू केहे कित तागो ।।
लेहेरी पूछे नीर कहाँ हे ।। ब्रछ केहे फळ लागो ।। २ ।।

जैसे मृग के नाभी में कस्तुरी रहती परंतु नासमझ के कारण वह मृग कस्तुरी ढुँढने बन में भटकता वैसेही कर्ता घट में है परंतु जीव उसे तीर्थ में,बनमें खोजते फिरता और अपना अनमोल मनुष्य देह गमा देता। पाटू याने कपडा,कपडे में धागा रहता(परंतु कपडा धागा है यह भूल जाता और खुद में)धागा कहाँ है,धागा कहाँ है यह खोजते फिरता। सागर की लहरों में पानी रहता परंतु लहरे पानी कहाँ है,पानी कहाँ है यह खोजते फिरती, वे लहरे यह नहीं समझती की मेरे लहरो में पानी ओतप्रोत है। पेड का फल है,वो पेड के अंदर है,पेड के अंदर

था,तभी तो पेड से निकला,पेड को फल बाहर से आकर लगा नही। यदी पेड के अंदर फल नहीं रहता,तो कहाँ से आता। फिर भी पेड ,बिज कहाँ होंगे यह ढुँढता। इसीप्रकार कर्ता घट में ओतप्रोत भरा है परंतु साधू कर्ता को बन में,करणियों में ढुँढते और अपना मनुष्य देह गमा देते। ।।२।।

जे कोई नाँव नाँव ही कहिये ।। लिव लागा सूं पावे ।।
तन के बाहर कर्ता ढूँढे ।। सो सब भूला जावे ।। ३ ।।

जो जो ज्ञानी ध्यानी मोक्ष पाने के लिए नाम प्राप्त करना चाहिए,नाम प्राप्त करना चाहिए ऐसा कहते है वह नाम राम भजन की लिव लगाने से घट में ही प्राप्त होता परंतु ज्ञानी,ध्यानी यह नहीं जानते इसलिए इस नाम को याने कर्ता को घट में न खोजते त्रिगुणी माया के करणियों में खोजते ऐसे करणियों में नाम खोजनेवाले सभी साधू भ्रम में भुले है,भ्रम में बंधे है। वे करणियों में कर्ता खोजते वे अनमोल जनम गमा रहे है। ।।३।।

काहा किणी मते मस्त मन कीयो ।। काहा किण तन सुकायो ।।
के सुखराम नाम बिन रटिया ।। किणी कछु नहि पायो ।। ४ ।।

मैं ही कर्ता हूँ ऐसा समझ कर कई साधू मन के मन में मस्त होकर रहते। तो कई साधू कर्ता करणियों में है समझकर करणियाँ कर कर तथा तीर्थ कर कर शरीर सुका देते परंतु रामनाम नहीं रटते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की ऐसे मस्त मत करनेवाले या तन सुखानेवाले किसीको भी मोक्ष में ले जानेवाला नाम नहीं मिलता। उनका यह अनमोल शरीर ऐसेही वृथा जाता। ।।४।।

३१८

।। पदराग कल्याण ।।

साधो भाई तत्त कळ लेहो बिचारी
साधो भाई तत्त कळ लेहो बिचारी ।।
मत्त ग्यान सूं जे नर उधरे ।। तो उधरे मांड ज सारी ।। टेर ।।

साधो भाई,तत्त कला की विधि धारण करो। तत्त ज्ञान के बिना अपने मत्त ज्ञान से किसी का भी उध्दार होता नहीं। उध्दार होता था तो पृथ्वी के सारे मनुष्योंका होता था सत्तज्ञान से देखा तो पृथ्वी के सारे मनुष्य मत्तज्ञानी है, फिर आज दिनतक किसीका भी मत्तज्ञान से उध्दार क्यों नहीं हुआ। इसलिए तू तत्त का बिचार धारण कर और मत्तज्ञान की सभी विधियाँ त्याग ।।टेर।।

मत तो सरब भरम का धोरा ।। तां मे बीज न होई ।।
ज्युँ घूमर की घटा दिखावे ।। तां मे छांट न कोई ।। १ ।।

मत्तज्ञान तो बिना तत्त के बिज के भ्रम का धोरा है याने बहती धार ।यह मत्तज्ञान धुएँ में से निपजे हुए बादलो के समान है। इन बादलो में पानी की एक बुंद नहीं रहती,फिर भी ये बादल भोले लोगों को असली बादल के समान दिखते। इसीप्रकार मत्तज्ञान में तत्तज्ञान नहीं

रहता फिर भी अज्ञानियों को मत्तज्ञान में तत्तज्ञान दिखता ।।१।।

जैसे नीर मृग जळ दीसे ।। यूँ तत्त बिनाँ सब करणी ।।
धरम पाप की बांध गाँठडियाँ ।। चोरासी लख फिरणी ।। २ ।।

जैसे हिरण को रेतीले जमीन पर एक बुँद जल नहीं रहता फिर भी जिधर उधर जल ही जल नजर आता वैसे ही मत्तज्ञानी को करणियो में उध्दार होने का तत्त बिज नहीं रहता फिरभी जिधर उधर तत्त बिज नजर आता। यह करणियाँ पुण्य और पाप की गठड्याँ है। यह धर्म पाप की गठड्याँ प्राणी को काल से उध्दार न करते चौरासी लाख योनि में फिराती। ।।२।।

मन बिन जीव जीव बिन काया ।। यूँ तत्त बिन मत सारा ।।
के सुखराम सकळ पिछतासी ।। अंत काळ की बारा ।। ३ ।।

जैसे जीव के बिना मन और काया मुर्दा है,चेतन नहीं है,अचेतन है,बिना कामकाज की है वैसे ही तत्त के बिना मत्तज्ञान की सभी पाप पुण्य की करणियाँ है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ये सभी अपने मत के ज्ञान से चलने वाले,ये सब अंतकाल में पश्चाताप करेंगे। ।।३।।

३४२

।। पदराग मिश्रित ।।

संतो भाई अे क्यूँ मोख न जावे
संतो भाई अे क्यूँ मोख न जावे ।। नाँव बिना गत पावे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,नाम सुमिरन किये बिना अच्छे स्वभाव से गती होती है तो चौरासी लाख योनि में के प्राणियों की भी गती होगी। ।।टेर।।

गडरी सरभर गरिब न कोई ।। सिंघ सम नहि झूठा ।।
बेस्या आस सकळ की राखे ।। कोड़ी जुग सू रूठा ।। १ ।।

अगर गरीब स्वभाव से गती होती थी तो भेड का स्वभाव कुद्रती जन्मत: गरीब है फिर भेड की गती निश्चित ही होनी चाहिए थी परंतु भेड की गती होती नही अगले चौरासी लाख योनि में अपने कर्म भोगने जाती और दु:ख भोगती। सिंह सदा झुठा झुका रहता। सभी से सर झुकते रखने से मोक्ष होता तो सिंह का प्रथम होता। उसकी सर झुकाये रखने से मुक्ति नहीं होती। वह अगले योनि में काल के दु:ख भोगने जाता। वेश्या सभी की भोग आशा पूर्ण करती। सभी की इच्छा पुर्ण करने से मोक्ष मिलता तो वेश्या को सर्व प्रथम मोक्ष मिलता परन्तु वेश्या शरीर छुटने के पश्चात जम के नरक में पड्ती। संसार त्यागने से मोक्ष होता तो कोडी पुरे संसार को रूठकर अकेले रहता। वह कोडी मोक्ष नहीं जाता दु:ख भोगने चौरासी लाख योनि में पड्ता। ।।१।।

कवो कड़वी बाण बोले ।। मेना बेण सु प्यारा ।।
रासब रोड़ी ज्याँ त्याँ लोट ।। अजिया कीच तज गारा ।। २ ।।

कड्वा बोलने से मोक्ष होता तो कौआ कड्वी बाणी बोलता तो कौअे का मोक्ष होता था परंतु

कौए का मोक्ष नही होता वह अगले चौरासी लाख योनि के दु:ख में जा पडता। मिठी वाणी बोलने से मोक्ष होता तो मैना का होता परंतु मैना का मोक्ष नहीं होता और कर्म भोगने के लिए आगे के योनि में पडती। राख लगाने से मोक्ष होता तो गधा पलपल में राख में लुळतेही रहता और चारो ओर अपने शरीर पर राख लगाता,परंतु गधा आजदिन तक भी कभी मोक्ष में कभी नहीं गया,अगले दु:ख भोगने दुजे योनि में जन्मा। चोका पोछा लगाने से मोक्ष मिलता तो बकरी अपने तन पर जरासा भी किचड बरदास्त नहीं करती और अपना तन किचड से साफ करती रहती,फिर भी बकरी का मोक्ष नहीं होता वह दु:ख भोगने आगे के योनि में जन्मती। ।।२।।

लूंकी बाघ बघेरा बन में ।। स्याळ सुसा बोहो होई ।।
बस्ती बीच स्वान रहे मिनकी ।। अर जगत रहे लोई ।। ३ ।।

बस्ती त्यागकर बन में रहने से परममुक्ती होती तो बन के लुंकी,बाघ,बघेरा,सिंयार,खरगोश समान बन में रहनेवाले सभी प्राणियों की होती। बस्ती में रहने से परममिुक्त होती तो बस्ती में रहनवाले कुत्तें,बिल्लियाँ,गाय,बैल,नर-नारी की होती थी परंतु इनमें से किसी एक की मुक्ति नहीं होती,सभी दु:ख भोगने अगला शरीर धारण करते। ।।३।।

तिरिया समज रमे सुख सेजा ।। कांही भोळप हुवे संगा ।।
कह सुखराम थके गुण नाही ।। गरभ बंधे घट चंगा ।। ४ ।।

जैसे स्त्री समझ से पुरुष के साथ संग कर सुख सेज मे रमी या भोलेपण में रमी दोनो को गर्भ रहनेका गुण लगता ऐसा ही प्राणियों मे भोलेपण में गरीब,त्याग,बन में रहना यह गुण है तो साधु सोच समझ से गरीब,त्याग,बन में रहना यह गुण धारते परंतु जैसे स्त्री ने भोलेपण में या चतुरपण में पुरुष का संग किया तो भी स्त्री को गर्भ रहता। ऐसा ही भोलेपण में करो या चतुरपण में करो चौरासी लाख के प्राणी से लेकर साधु तक मोक्ष मिलना चाहिए,परंतु चौरासी लाख योनि के एक प्राणी को मोक्ष मिलता नहीं,तो साधु को मोक्ष कैसे मिलेगा? आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इसीप्रकार चतुर बन के सतगुरु संग करो या भोलेपण मे संग करो,सतगुरु की विधि करने से भवसागर से तिरने का गुण लगता ही लगता। ।।५।।

३५०

।। पदराग भेरू (प्रभाती) ।।

संतो भाई अे क्युँ मोख न जावे
संतो भाई अे क्युँ मोख न जावे ।। नाँव बिना गत पावे ।। टेर ।।

संतो भाई,ये मोक्ष को,क्यों नहीं जाते।(नाव के बिना,नदी के पार जा नहीं सकते),वैसे ही रामनाम के बिना,गती मिलती नहीं। ।। टेर ।।

निसड्रो निमणो इण सम कुण हे ।। गाव बाग के जोड़े ।।
थावंर जीव हाले नहि डोले ।। इजगर मुख ना मोडे ।। १ ।।

निसर्डा(बेहा,बेशरम) गाँव जैसा और नमनेवाला(दबकनेवाला)शेर और दूसरा कौन है ।(शेर दबक-दबक के चलता है और दूसरे जानवर पर छलाँग लगाते समय,दबक के जमीनदोस्त हो जाता है ।),(ये दगाबाज बहुत नम्र रहते है। किसीने कहा है,

|| दगाबाज दुणानिवे चित्ता चोर कबाण ||

कबाण,दूसरों को मारने के लिए,बहुत नमता है ऐसा ही,चित्ता दूसरोपर छलाँग लगाते समय, नमता है। चोर भी चोरी करने के लिए दबक-दबक के जाता है। ऐसा ही कुँए पर पानी निकालने का झुला रहता,वह पानी जो जीवन है,पानी से ही सभी जीवीत रहते,ऐसा जीवनरूपी पानी भरके ले जाता।)यदि नमने से मोक्ष होता,तो शेर का क्यों न होता? जो हिलता नहीं,चलता नहीं ऐसे का मोक्ष होता तो,सभी स्थावर जीव हिलते नहीं,डोलते नही,वे मोक्ष को क्यों जाते नहीं? इधर-उधर खाने को लाने के लिए जाता नहीं,उसका यदि मोक्ष होता,तो,अजगर इधर-उधर मुँह घुमाकर,कुछ खाता नहीं,मुँह खोलकर अजगर पडा रहता, उसके मुँह में अपने आप,कोई जीव-जंतू जाता,उसे निगल लेता,तो अजगर मोक्ष को क्यों नहीं जाता?।।१।।

मिनखा देहे बिन सरब त्यागी || माया गह न कोई ||
ओ दर के उनमान लेहेणा || ओर पड़ीरो छोई || २ ||

संग्रह करनेवाला सिर्फ मानव है,मानव के सिवाय,कोई संग्रह करता नहीं। मानव देह के सिवाय,बाकी सब त्यागी है। त्यागन करने से मोक्ष होता,तो ये मोक्ष को क्यों जाते नहीं? दूसरे कोई भी प्राणी माया,(रूपये-पैसे)ग्रहण करते नहीं,तो वे मोक्ष को,क्यों जाते नहीं। सभी प्राणी अपने पेट में समाये उतनाही लेते,बाकी वही का वही पडा रहने देते,तो वे मोक्ष को क्यों नहीं जाते ? ।।२।।

सिंगल दीप जती बोहो तेरा || घर घर मे नर झूले ||
नारी संग जे जनम सो बीते || सपने काछ न खूले || ३ ||

सिव्हीलद्विप में यती तो बहुत है,घर-घर में यह यती झुलते( ),वहाँ पहले स्त्री राज्य था,तब उस राज्य में यती(इंद्रिय जितनेवाला)जाते थे,उनके इंद्रियोंकी,वहाँ की महिला (स्त्रियाँ)पूजा करती थी। पूजा करते समय,इंद्रिय चैतन्य हुआ,तो उसे मार डालते थे। इंद्रिय चैतन्य न हुआ,तो उसकी मोतियोंसे पूजा करके,वे उसे मोती दे देते थे। कोई हिजडा(नपुंसक) या खच्ची किया हुआ मनुष्य रहते और परीक्षा करते समय उसके इंद्रिय चैतन्य न हुआ ,तो उसे अंगभंग करके मुलुख के बाहर करते थे,यदि उसका मोक्ष होता तो वे मोक्ष को क्यों नही जाते?वे यती जनमभर,स्त्रियोंके संग रहे,तो भी उनकी लंगोटी,स्वप्न में भी नहीं छुटती । ।।३।।

अन जळ ओषद धीरत गोऊँ || बिष अमीरस पीया ||
कह सुखराम भूक तिस जावे || कोई अमर हुवे ना जीया || ४ ||

इनसे याने अन्न से,पानी से,औषधी से,घी से और गेहुँ से,इनसे भुख और प्यास जाती,विष पर अमृत पीने से,जीवित हो जायेंगे। लेकिन इनसे कोई अमर हुआ नहीं। कोई मृत्यक,जीवीत हुआ नहीं। इसतरह,उपर की दूसरी बातोंसे,भुख–प्यास जाने जैसा दूसरा फल मिल जायेगा, परंतु मोक्ष को कोई जाएगा नहीं,ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है। ।।४।।

३६७

।। पदराग सोरठ ।।

संतो ओ जग बडो अग्यानी

संतो ओ जग बडो अग्यानी ।।

सत बात कूं असत केत हे ।। असत सत्त कर मानी ।। टेर ।।

ये जग बडा अज्ञानी है। ये सच्चे बात को झूठा मानते है और झूठे बात को सत्य मानते है। ये तत्त भेद को झुठा मानते है और माया जो काल के मुख में डालती उसे काल मारनेवाली सत मानते। ।।टेर।।

स्पर्श चीज ध्रम की पेडी ।। तां कूं क्रम ठेरावे ।।

अमल तमाखू मुळ पाप को ।। सो सबके मन भावे ।। १ ।।

ग्रहस्थी स्पर्श चिज यह धर्म की सिढी है। ऐसे सिढी उसे पाप कर्म करके मानते है और अफीम,तंबाखू जो पाप कर्म का मूल है,वह सबके मन में भाँता है। ।।१।।

साधन कूं क्है हरि भगतीया ।। क्रमी कुं क्हे माटी ।।

आन देव कूं लुळ लुळ पूजे ।। म्हाप्रसाद ने बाटे ।। २ ।।

साधू को हर भक्तियाँ करके निंदा करते है और पापी को बडा मर्द मानते है। सत रामजी को त्यागते है और भेरु,भोपा,सितला,दुर्गा आदी देवी देवताओंको झुकझुक कर पूजते है और उसके भोजन को बाटी का महाप्रसाद कहते है। ।।२।।

कन्या असल ध्रम को कूपो ।। सो जनम्यां व्हे कारो ।।

पुत्तर जायां थाळ बजावे ।। सो क्रमा को भारो ।। ३ ।।

कन्या यह धर्म का कुआँ है। यह परघर बसाती है ऐसी कन्या जन्मते ही बेचेनी होती है, उदासी होती है। जबकी पुत्र कर्मो का भारा है उसके जन्म पर थाली बजाते है,उत्सव मनाते है। ।।३।।

खट क्रम ऊठ करे नित कोई ।। तां कूं जोर सरावे ।।

के सुखराम तत्त का भेदी ।। ज्यांरी निद्यां गावे ।। ४ ।।

नेती–धोती,नवली बस्ती,कपाली भाँती–भाँती के त्राटक ऐसे योग के छःकर्म है। ऐसे काल के मुख में डालनेवाले छःकर्म करनेवालो की शोभा करते है और उन्हें बडा षटकर्मी करके सराहते है और जो काल को मार चुका है ऐसा तत्त भेदी है उसकी हर भक्तियाँ करके निंदा करते है। ऐसे जगत के लोग बडे अज्ञानी है। सत बात को असत बात कहके निंदा करते और असत बात को सत कहके शोभा करते ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले।

||४||

३६९

|| पदराग भेरू (प्रभाती) ||

संतो सत्त सबद सो न्यारा

संतो सत्त सबद सो न्यारा || को जाणे हरजन प्यारा || टेर ||

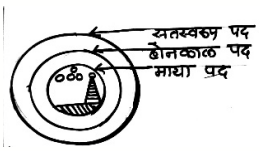

संतो सतशब्द तो अलग ही है कोई रामजी का जन रामजी का प्यारा होगा,वही सतशब्द जाणेगा। ||टेर||

सील झूट संतोष सारा || झूट सत्त जत्त दोई ||

भेद बिना सब ग्यान झूटो || माया को अंग होई || १ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,शील रखना याने ब्रम्हचर्य का पालन करना यह भी झूठा है। शील रखने में ही परमात्मा है,यह समझना झूठ है। ऐसेही संतोष रखना याने जितना उसके पास है उसमें ही संतुष्ट रहता है। यह संतोष रखना भी झूठ है। सत्त रखना याने कोई देह के भाग काटकर माँगेंगा तो उसे वह उसे दे देना या कोई कुछ चीज माँगेंगा वह उसे दे देना।(उदा.युधीष्ठिर राजा सत्य बोलनेवाला और सत रखनेवाला साधू था। उसने अपने विरोध केलढाई में शत्रु पक्ष के शत्रु दुर्योधन को अपने विरोध विजय प्राप्त कस्ने का उपाय बताया था। दुर्योधन वज्र याने पत्थर के समान बन जावे, तो वह हमारे पक्ष से किसीसे भी मारे नहीं जायेगा ऐसा उपाय दुर्योधन को दिया था।(वह उपाय ऐसा था की,गांधारी अपना पती पुरुष छोड्कर किसी भी अन्य पुरुष को नग्न स्थिती में देख लेती तो वह पुरुष वज्र का बन जाता। फिर वह पुरुष किसीसे भी मारा नहीं जाता।)ऐसा यह सत में पराक्रमी राजा था।)ऐसा सत्त रखना भी झूठ है और जत्त रखना भी झूठ है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते ब्रम्ह भेद के बिना यह शील रखना,संतोष रखना,सत्त रखना,जत्त रखना यह सभी माया के अंग झूठ है।

बाणी खाणी सरब झूठी || झूठा बेद कुराणा ||

क्रिया करणी जप तप सारे || तपसी तत्त ना जाणा || २ ||

वाणी(परा,पश्यंती,मध्यमा,बैखरी)झूठ है। खाणी(अंडज,जरायुज,अंकुर,उद्बीज) यह सब झूठी है,कोई समझते है की चारो खाण में जन्में और कर्म भोग लिए तो कर्म सब कट जाएँगे और मोक्ष मिल जाएगा परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि, चारो खाण में जाने से संचित कर्म नहीं कटते इसकारण मोक्ष पाने के लिए चारो खाण में जन्मना और मरना झूठा है। वेद और कुराण झूठे है। क्रिया और करणी करनेवाले,माया का जप करनेवाले, माया का तप करनेवाले,५ इंद्रिये को मारनेवालो ने भी उस तत्तसार को याने सतशब्द को जाना नहीं। क्यों की इनकी समझ,सोच,बुध्दी माया तकही है परंतू यह सतशब्द माया के परे है इसलिए इन सभी ने सतशब्द जाना नहीं। ||२||

ओऊँ सोऊँ त्याग तपस्या || तामस सत्त रज सोई ||

कह सुखराम सरब अंग माया ।। काळ सकळ सिर होई ।। ३ ।।

ओअम की भक्ति करना,सोहम की भक्ति करना याने संखनाल से उतरके बंकनाल से दसवेद्वार पहुँचते है,मूल माया का याने इच्छा माया का त्याग करना,तपस्या करना, तमोगुणी–महादेव की भक्ती करना,सतोगुणी–विष्णु की भक्ति करना,रजोगुणी–ब्रम्हा की भक्ति करना यह सभी आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते की,माया के अंग है और सभी के उपर काल है। ऐसे यह सभी काल के मुख में बैठे है ,

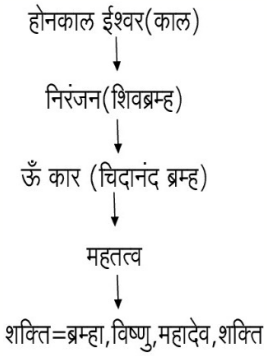

,महाप्रलय में सब मिट जाता है ।।३।।

१४

।। पदराग बिलावल ।।

अेसा भेव बतावज्यो

अेसा भेव बतावज्यो ।। समरथ गुरू मेरा ।।
राम मिलो इण देहे मे ।। काढु बिष झेरा ।। टेर ।।

हे मेरे समर्थ सतगुरु,मेरे घट में रामजी मिलेंगे और मेरी विषय वासनाएँ नष्ट हो जाएगी ऐसा मुझे भेद बताओ। ।।टेर।।

कुदरत तेरी सांईयाँ ।। मुज लखी न जावे ।।
मो मन अेसी ऊपजे ।। केसे हर पावे ।। १ ।।

हे साँईयाँ,आपकी कुद्रत मुझसे समझे नहीं जाती इसलिए घट में हर आपको कैसे प्रगट करु इसकी मन में चिंता उपजी है। ।।१।।

देहे अस्तल ना रूप के ।। घर गाँव न काया ।।
किस बिध मेळा कीजिये ।। तिरभन पत राया ।। २ ।।

हे रामजी,आपका सबको समझे ऐसा स्थुल रुप नहीं,आपका कोई घर नहीं,आपका कोई गाँव नहीं तथा आपको समझे ऐसा कोई देह नहीं, तो हे त्रिभुवन के पतिराज आपसे में कैसे मिलाप करु?।।२।।

पूरब प्रीत पिछाण के ।। मेरो घर आवो ।।
मै दुखियां तुम बाहिरां ।। मुज दरस दिखावो ।। ३ ।।

आप मेरे पूर्व के प्रेम प्रीत की जाण रखकर मेरे घर पधारो। आपके बिना मैं बहुत दु:खी हूँ।

मुझे आप घट में दर्शन दो। ।।३।।

मै निरबळ बळहीण हूँ ।। मुज सजे न काई ।।
सरणा गत सुखराम हे ।। हर मिल मन मांई ।। ४ ।।

मैं निर्बल हूँ,बलहिन हूँ,मुझमें आपको पाने की जराभी ताकद नहीं एवंम् आपको पाने का मुझसे कुछ साधे नहीं जाता परंतु मैं आपके शरण में हूँ इसलिए आप मेरे अंदर प्रगटकर मुझे मिलो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।४।।

१३४

।। पदराग जैजेवन्ती ।।

गुरूजी कारज किस बिध कीजे
गुरूजी कारज किस बिध कीजे ।।
ज्हाँ जाऊँ जहाँ सझे ना काई ।। नाव किसी बिध लीजे ।। टेर ।।

गुरुजी मेरे जीव का काल से मुक्त होने का मेरा कारज किस प्रकार से मैं करु?जहाँ जहाँ जाता,जो जो करता उसमें नाम लेने की विधि सजती ही नहीं,फिर मेरा कारज कैसा होगा। ।।टेर।।

ग्रेहे जे बांध उधम म्हे ठाणू ।। तो चिंता बोहो ऊठे ।।
त्यागी होय मांगणे जाऊं ।। तो मंछया मेहरी लूटे ।। १ ।।

गृहस्थी में रहकर निर्मलता से धंदा कर पेट भरता हूँ तो पेट भरे पुरता भी धन नहीं मिलता इसकारण संसार कैसे चलेगा इसकी चिंता सताती। संसार त्यागकर,त्यागी बनकर माँगकर पेट भरता हूँ तो पेट भरने से अधिक रोटी मिलती परंतु पाँचो इंद्रियो की इच्छारुपी पत्नी रात-दिन भोगों के लिए सताती। ।।१।।

बन मे जाय बेस रूँ सामी ।। तो मुज खुद्या सतावे ।।
कंद मूळ जो खिण खिण खाऊँ ।। तो मन धीर न आवे ।। २ ।।

मोह माया पकडे नहीं इसलिए नारी मुक्त ऐसे बन में जाकर बैठता हुँ,तो भुख लगने पर रोटी किसीसे नहीं मिलती। भुख लगने पर खोद खोदकर कंद मूल खाता हुँ,तो मन को पेट भरने का जरासा भी एहसास नहीं होता उलटी जोर से भुख लगी है यह महसुस होता ऐसी भूख सताती इसकारण मन को धीर नहीं आता। ।।२।।

मन कूं घेर ताव दूं भारी ।। तो तन सहेन कोई ।।
ललफल की हर माने नाही ।। ओर न सूझे हे मोई ।। ३ ।।

मन को पाँचो वासना से रोकने के लिए ताप देता हूँ तो देह यह ताप सह नहीं सकता ललफल में भक्ति की तो रामजी माने नहीं। ललफल में भक्ती करने सिवा मुझे दुजा उपाय दिखता नहीं। ।।३।।

पांचाँ माँय जाय जो बेसूं ।। तो मन झोड चलावे ।।
के सुखराम अेकलो बेठां ।। निद्रा आलस आवे ।। ४ ।।

पाँच सात मित्र मंड्ली जहाँ जमती है वहाँ जाता तो जिसमें राम नहीं ऐसी बेफिजुल की बातें याने झोड मेरा मन करता और अकेला बैठता तो आलस निंद्रा बहुत सताती ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।४।।

१६७

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

जंतर मंतर अेक न जाणुं

जंतर मंतर अेक न जाणुं ।। झाड़ा झपाड़ा कौ मेरे बे ।।
ना मे बेदज दर्द नहीं जाणुं ।। साहिब सरणे तेरे बे ।। टेक ।।

मैं कोई रोग जानता नहीं और रोग निवारण करनेवाले मंत्र,जंत्र,झाड,झपाटा तथा वैद्यज्ञान नहीं समझना चाहता। मैं तो सिर्फ आपका शरण लेना और आपका स्मरण करना जानता। ।।टेर।।

अरज सुणो अर सन्मुख जोवो ।। दुख ताव सब खोवो बे ।।
बिडद तुमारो प्रभु म्हे अेसो सुणियो ।। नारी को नर होवे बे ।। १ ।।

प्रभु,मेरी सुनो और मेरे तरफ देखो और आप मेरे भवसागर से उध्दार होने के सभी दु:ख तकलीफे गवाँ दो। प्रभु, मैने आप दु:खी नारी को पुरुषी नर,कर सकते ऐसा आपका बिडद है यह सुना। ।।१।।

गज का प्रभू फंद तुमने काटया ।। छिन मे बाहिर लीयो बे ।।
सुणज्यो साहेब सम्रथ मेरा ।। बिडद प्रगट ओ कीया बे ।। २ ।।

प्रभू शरण आये हुए हाथी का पल में काल का फंद काटा और काल से बाहर याने मुक्त कर भवसागर में डूबने नहीं दिया ऐसा आपने आप का बिड्द हाथी के लिए प्रगट किया वैसे ही मैं भी आपके शरण आया हूँ ,मेरे भी भवसागर में डुबने के दु:ख काटो। ।।२।।

दुखिया का प्रभू सब दुख काटो ।। इम्रत बाणी ले भाको बे ।।
केतो दास के पास न मेलो ।। के बिड़द तुमारो राखो बे ।। ३ ।।

आप दुनिया के नर–नारी के सभी काल के दु:ख काटते हो वैसे ही मेरे दु:ख काटो। मैं भी आपका दास हूँ। या आप अमृत बाणी याने मिठे शब्द से बोल दो की काल के दु:ख मिटाने के लिए मेरे पास मत आओ। काल,जो दु:ख देता वह भोग लो तो मैं वे दु:ख भोगते रहुँगा। आपके शरण रहने पर काल के दु:ख मैं भोगू तो उसमें तुमारा बिड्द जाता वह बिड्द मत जाने दो उस बिड्द को राखो। ।।३।।

दास तों प्रभू तुज पुकारे ।। आन ओर नही माने बे ।।
जिण जिण बिध प्रभु आप गूसांई ।। हरजन कछु नही जाने बे ।। ४ ।।

मैं तो तिरने के लिए संसार में सिर्फ आपका शरणा है यह जानता और ब्रम्हा,विष्णु,महादेव, शक्ति,अवतार इन सभी का शरणा तिरने के लिए झूठा है यह समझता इसलिए मैं सिर्फ तुम्हें(पुकारता)हरीजन कैसे तिरता यह नहीं जानता। किस किस विधि से हरीजन तिरेगा

यह विधि सिर्फ आपही गुसाई जानते हो। ।।४।।

जुग जुग जन की थे स्हायज कीनी ।। भीड़ पड़ी त्याहाँ आया बे ।।
सिंवऱ्या जुग जुग आप पधारे ।। बिड़द बांका तुज गाया बे ।। ५ ।।

पहले भी युगो युगो में संतों की आपने सहाय्यता की और जब जब संता के उपर संकट पडा तब वही तुम आ गये। तुम्हारा स्मरण करते ही युगो युगो में पहले ही तुम आये। सभी संत तुम्हें बिडद बंका कहते है । जिस तरह से शूरवीर को रणबंका कहते है,उसी तरह से आप को भवसागर से तारनेवाले बिडद बांका कहते है। ।।५।।

के सुखराम सूणो हर मेरी ।। मो सामो दिल दीजे बे ।।
कामी क्रोधी तोइ हुँ तेरा ।। सहाय बिड़द सुण कीज्यो बे ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मेरी सुनो, ऐसे ही उनके समान मेरे ओर भी नजर घुमाओ और मेरे काल के दु:ख निवारणे के लिए तुम्हारा दिल दो। मैं कामी,क्रोधी हूँ,फिर भी मैं तुम्हारा हूँ,हरीजन को सहायता करना यह तुम्हारा बिड्द है,वैसी मेरी भी सहायता करो। ।।६।।

२०२

।। पदराग कानडा ।।

किरपा करो गुरू सिष कूं रे तारो
किरपा करो गुरू सिष कूं रे तारो ।। भरम करम मन ममता मारो ।। टेर ।।

हे मेरे सतगुरु साहेब, आप मुझ पर कृपा करो और भ्रम,कम,मन,ममता मार दो।

*भ्रम–काल खाता ऐसे त्रिगुणी माया में पूर्ण और तृप्त सुख मिलेंगे यह झूठी समज रखना इसे भ्रम कहते है ऐसे मेरे भ्रम को सतज्ञान से मार दो।

*कर्म–वेद,व्याकरण,शास्त्र,पुराण कर्मकांड बताए है। इन कर्मकांडो में कालरहीत तृप्त सुख है ऐसा समझके जो मैंने आजदिन तक काल के कार्म किए वे मेरे सभी कर्म काट दो और मुझ कर्मरुपी काल से मुक्त कर दो।)

*मन–पाँचो शब्द,स्पर्श,रूप,रस,गंध इन काल वासनाओं की भाग भागकर चाहना करता और काल के दु:ख,चौरासी लाख योनि के दु:ख में पटकता ऐसे मेरे मन को सदा के लिए मार दो।

*ममता–जिसमें काल ठसोठस भरा है ऐसे सभी त्रिगुणी माया के सुखों की चाहना रखकर उन वस्तुओंको कैसे भी प्राप्त करने की इच्छा करना उसे प्राप्त करके उस वस्तूसे जुड़कर उससे मोह करना इसे ममता कहते हैं,ऐसे मेरे भ्रम,कर्म,मन और ममता मार दो। ।।टेर।।

जनम जनम मे बोहो दु:ख पाया ।। ता ते अब सरण तुमारी आया ।। १ ।।

मैंने मेरे भर्म,कर्म,मन,ममता के कारण जन्म–जन्म से बहुत दु:ख पाये है। इस दु:ख से छुटकारा पाने के लिए मैं आपके शरण में आया हूँ। ।।१।।

अेसा निज भेव भेद मै पाऊँ ।। आवागवण बोहोरनही आऊँ ।। २ ।।

मुझे आप मैं बार-बार आवागमन में नहीं आऊ ऐसा निजपद का निजभेद दो। ।।२।।

तुम दाता मै मंगता हुँ तेरा ।। सुण साहेब गुरू समरथ मेरा ।। ३ ।।

हे समरथ,गुरुसाहेब सिर्फ आप ही निजभेद देनेवाले दाता हो और मैं निजभेद माँगनेवाला मँगता हूँ। ।।३।।

केहे सुखराम गुरा दान दे सांई ।। परमपद बिन लेंसुं नाई ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सतगुरु समर्थ से कहते है कि,मुझे दान में भर्म,कर्म,मन, ममता मारनेवाला परमपद चाहिए। मुझे होनकाल की दुजी कोई वस्तू नहीं चाहिए इसलिए मैं आप से परमपद सिवा दुजी कोई वस्तू नहीं लूँगा। ।।४।।

२०४

।। पदराग जोगारंभी ।।

कोहो इण मन सुं क्या करूं

कोहो इण मन सुं क्या करूं ।। किण बिध ल्युँ समझाय ।।

जागरत सुषोपत सपन मे ।। निसदिन बिषे मत खाय ।। टेर ।।

यह मेरा मन जागृत अवस्था में,स्वप्न दशा में और गाढी निंद में रात-दिन विषय रस मथमथ कर खाता ऐसे मेरे मन का मैं क्या करु?मैं उसे किस विधि से समाजाऊ?।।टेर।।

साध संगत गुरू टेल के ।। नेड़ो आवे नहि कोय ।।

भजन करन कूं बेसिया ।। तब मन रेवे वो सोय ।। १ ।।

यह मेरा मन साधू संगत के तथा गुरु की सेवा के नजदिक जरासा भी आता नहीं और मैं भजन करने बैठता हूँ तो मेरा मन,सोने का विचार करता और खुद भी सोता और मुझे भी सुला देता। ।।१।।

आठ पोहर परमोद ह्युँ ।। तोई वो बोले नही साच ।।

कोट जतन लख बीनती ।। कर कर दीटी म्हे खाच ।। २ ।।

मैं आठो प्रहर चोबीसो घन्टा रामजी का उपदेश देता हुँ कि,रामजी सत्य है और विषय विकार झूठे है तो भी यह सत्य रामजी को भजता नहीं। मैंने मेरे मन से विषय विकारों में न पड्ने के लिए लाखो प्रकार की बिनतियाँ की और लाखो प्रकार से डाट कर देखा परंतु यह मेरा मन जरासा भी मानता नहीं। ।।२।।

धरम पून सत्त जत्त कुं ।। भूले न पकडेनी बीर ।।

भगत मुगत हर भजन की ।। अंतर ब्यापे नहिं पीर ।। ३ ।।

यह मन जिससे रामजी घट में प्रगटेगे ऐसे सत धर्म,सतपुण्य को,जतीपण याने शील को भुलकर भी धारण नहीं करता। मेरे मन को परममुक्ति की,रामजी के भजन भक्ति की जरासी भी पिडा याने चिंता व्यापती नहीं। ।।३।।

केह सुखदेव मै कादच्यो ।। इण मन माया कूं जोय ।।

राम निभावे तो नीभु ।। नीतो निभणो न होय ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैं मेरे मन से और मन के विकारी माया से परेशान हो गया। मुझे रामभजन करने में रामजीने निभाया तो ही मैं निभूँगा नहीं तो मेरा निभना बहुत मुश्किल है। ।।४।।

२१२

।। पदराग हिन्डोल ।।

मे बोहोत दुखी जुग माय

मे बोहोत दुखी जुग माय ।। स्मरथ सर्णे लीजे हो ।। टेर ।।

मै अब इस संसार में,बहुत ही दुखी हुँ। तो समर्थवान,अब मुझे आप ही,अपनी शरण में ले लो। ।। टेर ।।

जुग जुग रूं मे तुमरी लारा ।। दास न दूरा कीजे हो ।। १ ।।

मै युगो-युगो में,तुम्हारे पीछे,तुम्हारे साथ मे रहुँगा। तो तुम्हारे दास को(मुझे),दूर करो मत। ।। १ ।।

जुगन जुगन मे फिरियो चोरासी ।। जनम जनम दुख पायो हो ।। २ ।।

मैं युगो-युगो से चौरासी लाख योनियों में,घुम रहा हुँ। इस चौरासी लाख योनियोंके घर, जन्मों में-जन्मों में दु:ख भोगते हुए आया। ।।२।।

सुरपुर नरपुर प्यांळज देख्या ।। मासो सुख काहुँ नाही हो ।। ३ ।।

मैंने देवताओंका स्वर्ग भी देखा, मृत्युलोक भी देखा और पाताल भी देखा परंतु कही भी, एक मासाभर भी सुख नहीं है। ।।३।।

मात पिता कुळ भाई र बंधु ।। स्वारथ का सब कोई हो ।। ४ ।।

ये माँ-बाप और कुल,भाई-बंध ये,सभी कोई अपने-अपने स्वार्थ के है। ।।४।।

ग्यान बिण मे सब जुग जोयो ।। गुरां बिन कांहुँ सुख नाही हो ।। ५ ।।

मैंने सभी ज्ञान भी संसार के देख लिए उन सभी ज्ञानों में ऐसा कहा है कि,गुरु शिवाय कही भी सुख नहीं। ।।५।।

के सुखराम सुणो गुरू सांई ।। तम बिन जीसुं नाही हो ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,तुम्ही गुरु स्वामीजी सुनो,तुम्हारे बिना मेरा जीना होगा नहीं। ।।६।।

२३५

।। पदराग भेरू (प्रभाती) ।।

मेरे मनकी दुबध्या मेटो प्रभुजी

मेरे मनकी दुबध्या मेटो प्रभुजी ।।

तम हम मिलाँ अवस कर स्वॉमी ।। अेक अंग कर सेंठो ।। टेर ।।

सतगुरु से ज्ञान सुनता तो सतस्वरुप सत्य है और ब्रम्हा,विष्णु,महादेव के ज्ञानी गुरुओंसे ज्ञान सुनता तो माया सत्य है ऐसा मेरे मन को दुविधा रहती है इसकारण मैं कभी सतस्वरुप

सत्य है तो कभी माया सत्य है ऐसे दुविधा में याने दो बिचार में रहता। हे स्वामी, यह मेरे मन की दुविधा मिटाओ। हे स्वामी,मेरा मन सतस्वरुप सत्य से एक कर दो,पक्का कर दो,फिर क्या सत्य है और क्या झूठ है इस संकल्प विकल्प में मत जाने दो तब मुझे बिना विलंब आपमें अवश्य मिलते आएगा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।टेर।।

लोंचो खाय डिगे पल माँही ।। सिकळ बिकळ होय जावे ।।
कबुयक राव रंक व्हे दाता ।। युं बोहोता दुख पावे ।। १ ।।

यह मन हिचकिचाता है तथा यह मेरा मन सुख–दु:ख से झामगा जाता। कभी यह राजा बनने में सुख मानता तो कभी रंक बनने से दु:ख देखता,कभी दाता बनके आनंद लेता ,तो कभी भिक्षा माँगने से डरता,कही सुख दिखते तो कही दु:ख दिखते ऐसे सिकल विकल हो जाता,अस्थिर हो जाता और अनेक दु:ख पाता। ।।१।।

घंडि अेक कहे भगत म्हे कर सूं ।। पल खिण में छिटकावे ।।
नावो जाय गिरेमे रत्त रे ।। नासो भगत संभावे ।। २ ।।

एक घडी में कहता है कि सुख पाने के लिए रामजी मैं तेरी भक्ति करुँगा,तो दुजे घडी में मृगजल के समान विषयरस के सुख देखकर भक्ति मानकर भी छोड देता। इसप्रकार यह मेरा मन काल के डर से ग्रहस्थीपण में भी रमता नहीं और आपके तृप्त सुख समझते नहीं इसलिए आपमें भी रमता नहीं । ।।२।।

पलमें कहे जगत हे झूटी ।। भगत साच हे भाई ।।
खिणमे आण मिले सेंसारी ।। बिष जुग रहे समाई ।। ३ ।।

पल में कहता यह संसार की मोह ममता झुठी है और प्रभुजी की भक्ति सत्य है और दुजे पल में ग्रहस्थी पण के झुठे विषय रसो को सत्य समझकर इन रसो में रचमच जाता। ।।३।।

दुबध्या मांहे बहुत दुख पावे ।। नां ऊलो ना पेलो ।।
ज्यूं सुण पान बघुळे मुखमे ।। भटकर अधरती गेलो ।। ४ ।।

मेरा मन विषय रस और सतस्वरुप के भक्ति रस का फरक समझ नहीं पाता,इसकारण भक्ति रस में इधर का रहता ना उधर का रहता। भक्ति रस और ग्रहस्थी रस के दो बिचार में भटक कर बहुत दु:ख पाता। जैसे पत्ता चक्रवात में चारो और घुमता,या मुसाफीर आधी रात को रास्ता भूल कर,गली गलियों में घर खोजते फिरता ऐसा मन मेरा आपको पाने के लिए दुबध्या में भटकते रहता। ।।४।।

डिग पच करे हुवे मन पाछो ।। भगत न मेली जावे ।।
युं मन रात दिवस घट घोटे ।। ओ प्राणी ब्हो दुख पावे ।। ५ ।।

तेरे भक्ति में मेरा मन नहीं चलता मेरे मन से आगे थोडा चलता नहीं चलता तो पिछे आकर गिरता इसप्रकार मेरे मन से तेरी भक्ति पूर्ण की नहीं जाती। ऐसा मेरा मन रात–दिन कभी आगे चलता और कभी पिछे आकर गिरता इसकारण मैं बहुत दु:खी रहता। ।।५।।

अरज करे सुखराम गुसांई ।। सुण साहिब हर रामा ।।
मे तो सरण तुमारी आयो ।। मोहे दिखावो निज धामा ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,हे गुसाई,हे साहेब,हे हर,हे रामजी मैं आपके शरण में आया हूँ। मेरी आपको बिनती है कि,आप मुझे आप का परमसुख का निजधाम दिखाओ। ।।६।।

२४३

।। पदराग भेरू (प्रभाती) ।।

मो बळ कर्म न जावे प्रभुजी
परापरी से दो पद है ।

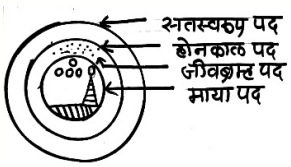

महासुख के पद को हरी का पद कहते है। सुख के साथ अलग–अलग भाँति के महादु:खों के पद को काल का पद कहते है।

इस जीव को दो पद कैसे उपलब्ध है?

सतस्वरुप में होनकाल है और होनकाल में जीव है मतलब जीव के लिए दोनो पद उपलब्ध है। सतस्वरुप के देश जाने के लिए हरी का शरणा और सुमिरन चाहिए। होनकाल के देश में गुते रहने के लिए मायावी क्रियाओंकी जरुरत रहती है। जीव को आदि स्थिती में सुख और दु:ख दोनो नहीं थे। जीव को सदा सुखो की चाहना रहती है। जीव के सामने दोनो पद उपलब्ध है। जीव यह ब्रम्ह है परंतु उसके साथ मन और ५ आत्मा यह माया आदि से ही है। सतस्वरुप देश में ५ आत्मा और मन यह माया जा नहीं सकती। यह माया ढकलने पर भी नहीं जा सकती। मन को ५ आत्माओंके सुख चाहिए। मन को चेतन जीव के सिवा सुख नहीं मिल सकते। आदि स्थिती में(जीव जैसे था वैसे स्थिती में भी)जीव को और मन को दोना को सुख नहीं थे। मन जीव को जखड के जुडा था। जीव मन को अपने बल से छुडा नहीं सकता। इसलिए जीव को मन के साथ रहना ही पडता। मन यह माया है इसलिए वह माया में ही सुखोंकी कल्पना कर सकता। कल्पना के जोर पर मन जीव को माया के सुखो में उकसाता। जीव मन को खुद के बल पर छोड नहीं सकता इसलिए जीव मन के घेरे में आकर ५ तत्वोंका देह धारन करता और सुखों के लिए माया की क्रिया करता। इन मायावी क्रिया को कर्म कहते। यह क्रियाएँ याने कर्म मनुष्य देह में करने से जीव के साथ मन और ५ आत्मा जैसे जीव को आदि से चिपकी है वैसे ही जीव को यह कर्म जिस विधि से किए उस विधि से बदले के रुप में दिए तो ही खारीज होते है याने दिए जाते है वरना जीव के साथ मन,५ आत्मा और तिजे कर्म ऐसी नई स्थिती बनी रहती है। यह कर्म भोगवाने का कार्य काल का होता है। यह काल जालिम है। अपार दु:ख देनेवाला है। कर्म करते समय कितने भी आँख फाडफाड के शुभ कर्म किए तो भी अशुभ कर्म होते ही है। शुभ कर्म के फल सुख देनेवाले होते है और अशुभ कर्म के फल दु:ख देनेवाले है। कर्म जबतक जीव के साथ रहेगे तब तक सुख और दु:ख दोनो बनेही रहेगे क्यों की कर्म शुभ और अशुभ कर्मो

का मिश्रण है। कर्मो से बने हुए दु:ख जीव को बहुत बुरीतरह सताते इसलिए जीव दु:ख का मूल कर्म है यह समझके खुद के बल से कर्म गमाने की कोशिश करता। याने कर्म मिटाने की कोशिश करता।

कर्म तीन प्रकार के रहते।

१) संचित २) प्रारब्ध ३) क्रियेमान ।

* नये कर्म करता उसे क्रियेमान कर्म कहते।

* जिन कर्मो का बदला दिए नही गया वे कर्म हंस के साथ जमा हो जाते इसलिए उसे संचित कर्म कहते है।

* जिस-जिस देह में हम जाऐंगे उस देह के साथ बदला चुकाने के लिए दिए हुए कर्म को प्रारब्ध कर्म कहते है।

ऐसे जीव के संचित याने गठ्ड़ी के रुप में,प्रारब्ध याने वर्तमान स्थिती के रुप में और प्रारब्ध कर्म भोगते वक्त तथा मन के दु:ख,तन के दु:ख एवम् आ आकर पड़नेवाले दु:ख से क्षणिक याने कुछ पल निकलने के लिए किए हुए कर्म याने क्रियेमान कर्म। ऐसे तीन कर्मो के चक्कर में जीव जखड़ा है। इन कर्मो से छुटकारा नही पाया तो काल दु:ख भुगवाते रहेगा मतलब काल से छुटकारा पाना याने कर्म से छुटकारा पाना यही एकमात्र मार्ग है यह जीव समझता। इसलिए जीव ने अपनी कर्म काटने की अक्षमता(निर्बलता)प्रभू से बतायी और प्रभू के संतो से सुनी हुई कर्म काटने की विधि करने की चाहना की। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज यहाँ परमात्मा से कहते है कि,मेरे बल से कर्म नहीं कटते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तो अमरलोक से आए है उन्हें तो कर्म लगते नहीं फिर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज यहाँ ऐसा क्यों कह रहे है?तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को पता है कि,यह जीव जिन महादु:खों में पड़ा है उसका कारण है कर्म और यह हंस के बल से नहीं मिट सकते। इनको अगर मिटाना है तो सतस्वरुप परमात्मा का शरणा लेना होगा,तभी वह मिट सकते है और यही बात समझाने के लिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने खुद को सामने रखकर यह पद लिखा है।

मो बळ कर्म न जावे प्रभुजी ।। मो बळ कर्म न जावे ।।
आगे किया तके किण पारा ।। अब ही ब्हो होय आवे ।। टेर ।।

हे प्रभुजी,मेरे बल से कर्म मिटेंगे नहीं। यह वर्तमान देह पाने के पहले मैंने अपार कर्म किए। उन कर्मो का अंत(बदले दे देके भी)आया नहीं और आता भी नहीं। इसके पश्चात अभी भी मेरे हाथ से बहुत से नए-नए कर्म हो रहे है। ।।टेर।।

रग रग रूम रूम को खूनी ।। पग पग दावा मेरे ।।
बदला दियां कदे नही छूटूं ।। ज्हां तहां मुज कूं घेरे ।। १ ।।

मेरा रग-रग याने नाडी-नाडी तथा रोम-रोम याने बाल-बाल किए हुए कर्म का खुनी है

याने किए हुए कर्म का दोषी है। इन कर्मो के दावे मेरे कदम-कदम पर है याने पल-पल मेरे साथ है। इतने अनगिनत कर्म मुझसे हुए है। जिन-जिन के साथ मैंने कर्म किए मतलब गुन्हें किए वे बदले के रुप में देना चाहुँ तो मैं कभी भी कर्म से मुक्त नहीं हो पाऊँगा। ये बदले मुझे जहाँ तहाँ तथा जब तब घेरते रहते और मैं उन कर्मो से घिरा रहता। ।।१।।

करणी किया क्रम शिर बंधे ।। ध्रम पुन्न होय दावो ।।
तपस्या कियां तिर्था भटक्या ।। ब्हो बिध जीव सतावो ।। २ ।।

कर्मो से बने हुए दु:ख मिटाने के लिए वेदो की शुभ शुभी करणियाँ की तो भी कर्म सिर पर बाँधे जाते। वेदो के भी अनुसार धर्म एवम् पुण्य कर्म किए तो भी आगे धर्म के एवम् पुण्य के कर्म भुगतने के लिए सर पर बांधे जाते है। तपस्या की तो भी बहुत से जीव सताये जाते। तपस्या करते तब धुनी लगाते। धुनी के अंगारोसे बहुत से जीव सताये जाते तीर्थ किए तो तीर्थो में जल के बहुत प्रकार से जीव सताये जाते। धरती के बहोत से जीव चलते-चलते मरते। इसकारण उन जीवो का बदला मेरे पर दावे के रुप में खडे हो जाते। ।।२।।

जे म्हे जतन करूं ब्हो गाढो ।। आँख खोल नहि जोऊं ।।
तीन ताष का कर्म हमारा ।। संचत कुण बिध खोऊँ ।। ३ ।।

मैं अगर क्रियेमान कर्म होंगे ही नहीं ऐसा गाढा प्रयास करुँ और नये कर्मो के ओर आँख खोल के भी नहीं देखूँ ताकी नये कर्म मेरे से होवे ही नहीं तो बडा प्रश्न खडा रहता है कि, तीन प्रकार के कर्म मेरे साथ है। संचित,प्रारब्ध,क्रियेमान,प्रारब्ध भोग रहा हूँ। क्रियेमान होने नहीं दुँगा पर संचित कर्म यह कैसे मिटाऊँगा?।।३।।

जो जो ऊठ उपाय करीजे ।। जीव मरे सब माही ।।
जे मुक्त हुवे बदला दीया ।। तो सपने कदे न जाही ।। ४ ।।

इन कर्मो का बदला देने के जो-जो माया के उपाय है वह मैं करता हूँ तो बदले देते वक्त जानते न जानते याने जाने अनजाने में जीव मरते है। जीव मरने से फिर नये बदले बनते। पहले के बदले देने से ही अगर मैं कर्म से मुक्त हो सकता हूँ तो मैं सपने में भी मुक्त नहीं हो सकता मतलब कभी भी मुक्त नहीं हो सकता। ।।४।।

क्हे सुखराम सरण हर तेरी ।। अेसी मोय बताई ।।
भजन किया सूं करम कटे सो ।। कटे पलक के माई ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,हे सतस्वरुपी परमात्मा,मेरी यह चिंता मैंने संतो को बतायी,तो संतो ने मुझे बताया की,प्रभु का शरणा लेने से और उसका भजन करने से सहज मे याने समझ न पडते हुए पलक में सभी कर्म कट जाते है।

२८१

।। पदराग बिहगडो ।।

प्रभूजी मै काहा करूं इस मन को
प्रभूजी मै काहा करूं इस मन को ।।

सत्त लोक की बात न माने ।। सुख चावे इस तन को ।। टेर ।।

प्रभुजी,मैं अब इस मन का क्या करु?मेरा मन महासुख के सत्त लोक में जाने की बात सुनता नहीं और शरीर के पाँचो इंद्रीयो के सुख जिद करके लेना चाहता। ।।टेर।।

सुत बिन नार त्याग घर अपणो ।। दूर दिसन्तर जावे ।।
ज्याँ त्याँ जाय धरे शिर सेवग ।। दूणो हेत लगावे ।। १ ।।

अपनी पत्नी,पुत्र और धन छोड्कर साधू होता और दुर देशांतर जाता। जहाँ–जहाँ जाता वहाँ–वहाँ अपने चेले बनाता और उनसे अपनी पत्नी,पुत्र से जादा मोह ममता करता और सत की बात तो खोजता नहीं। ।।१।।

ग्यान ग्रंथ मैं बोहोत सुणाऊँ ।। प्रसंग दिष्टंग सोई ।।
ऊण बेळा में मन जे करले ।। वे तो पलटे पल में आई ।। २ ।।

इस मन को मैं सत्तज्ञान के ग्रंथ के ग्रंथ पढ्कर समझाता। उसे समझने के लिए जगत में घडे हुए अनेक प्रसंग,दृष्टांत्त बताता,सुनाता उस वक्त उसके समझ में आता परंतु माया में लग गया की पलभर में ही माया का बन जाता । ।।२।।

जे मन घेर संत पे जाऊँ ।। ग्यान ज बोहोत सुणावे ।।
गुण सुण लाख सेस दस छाडे. ।। ओगण अेक संभावे ।। ३ ।।

यदि मैं मन को घेरकर संत के दरबार जाता हूँ और संतो से मन को ज्ञान सुनाता हूँ तो मेरा मन उन संत के लाखो गुण छोड देता संत में एखाद अवगुण रहा तो उसे पकड्कर लेता। ।।३।।

मन कूं घोटर घर मे राखुं ।। राम राम मुख गावे ।।
छिन पल मांहि किदर होय भागे ।। जाय बिषे रस खावे ।। ४ ।।

मन को जबरदस्ती करके घट में रखकर मुख से रामराम करता। तो पलभर में चिड्कर कही का कही भाग जाता है और वहाँ जाकर विषय रस पिता है। ।।४।।

के सुखराम सुणो हर दाता ।। ओ मन मो बस नाहीं ।।
मै तो सरण तुमारी आयो ।। प्रभू स्याय करो हो गुसाँई ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,यह मन मेरे बस नहीं है। मैं आपके शरण में आया हूँ। आप प्रभु,गुसाँई मुझे सहायता करो और इस मन को मेरे बस करो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।५।।

२८२

।। पदराग गोडी ।।

प्रभूजी मेरे मन कूं हिम्मत दीजे
प्रभूजी मेरे मन कूं हिम्मत दीजे ।।
जुग मरजाद तोड़ सब साँमी ।। सरण आपकी लीजे ।। टेर ।।

प्रभुजी मेरे मन को हिम्मत दो,हिम्मत दो। स्वामी,मेरे इस माया की जग मर्यादा रखने के

स्वभाव को तोड्कर मुझे आप आपकी शरण में लो। ।।टेर।।

भजन करूं भगती में पेंसू ।। होय मतवाळो डोलूं ।।
जे हर आप करो हर किरपा ।। तो अणभे बायक बोलू ।। १ ।।

मैं आपका भजन करता हूँ भक्ति में बैठता हूँ और भक्ति के आनंद से मदोन्मत्त होकर डोलने लगता हूँ। प्रभुजी मैं आपके कृपा से माया मोह के परे के अणभय देश के शब्द भी बोलता हूँ।।१।।

ओ व्हे जाय कबु यक काचो ।। जब मुझ सझे न काई ।।
करम कीट हर भरम अंधेरो ।। मोहि पलोटे आई ।। २ ।।

परंतु मुझ पर और मेरे कुटुंब परिवार पर दु:ख पड्ने पर यह मेरा मन कभी कभी भक्ति में कच्चा हो जाता है तब मुझसे भक्ति सजती नहीं। मेरे कुटुंब परिवार के मोह ममता के कर्म और भर्म का अज्ञान मुझे जखड लेता है। ।।२।।

दुख सुख मांय रखो मन अेकी ।। दूज्यो होण न पावे ।।
ज्यूँ ओ भगत करेगा तेरी ।। आठ पोहोर गुण गावे ।। ३ ।।

मेरा मन मुझ पर कितना भी दु:ख पडा तो भी जैसे मेरा मन सुख में खुश रहता वैसा ही दु:ख में भी खुश रहने दो। मेरे मन को दु:ख में दु:खी मत होने दो ऐसा होने पर ही मैं तेरी भक्ति आठो प्रहर रात–दिन कर पाऊँगा। ।।३।।

के सुखराम अरज हर सुणियो ।। भगत बिड़द हर तेरा ।।
मै जुं सरण बोहोत सुख पाऊँ ।। प्रभूं बळवंत्त कर मन मेरा ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,हे रामजी,मेरी अरज सुनो,रामजी भक्त बिड्द नाम है आपका। भक्त को दु:ख में भी बलवंत रखता यह बिड्द है आपका। हे प्रभु,मेरा मन दु:ख में बलवंत रखो दु:खी होकर दुबला मत होने दो। मैंने आपका शरणा लिया हूँ। मुझे सुख में रखकर बहुत भक्ति करने दो जिससे मुझे आपके बहुत सुख मिलेंगे। ।।४।।

२८३

।। पदराग बिहगडो ।।

प्रभुजी मेरी बाहाँ संभावो
प्रभुजी मेरी बाहाँ संभावो ।।
मे खूनी अपत्ति तोई तेरो ।। कृपा कर घर आवो ।। टेर ।।

प्रभुजी,आप मेरा हाथ पकडो। मैं खुनी हूँ,पापी हूँ फिर भी आपका हूँ इसलिए आप मेरे बन के मेरे घर पधारो। ।।टेर।।

डरप्यो जीव करम सुण मेरो ।। ढयाढि करे मन माही ।।
रूणके जीव मोख कूं साहिब ।। सुण हो आद गुसांई ।। १ ।।

मेरे किए हुए कर्मो के पडनेवाले भोग सुनकर मैं बहोत डर गया हूँ। मेरा मन रौंद रौंद कर रो रहा है। हे मेरे साहेब,हे आदि गुसाई,मेरा जीव मोख के लिए झुर रहा है। ।।१।।

तलब लगी मेरे उर माही ।। थ्यावस साहेब दीजे ।।
दिल भर मो दिस जोय गुसांई ।। जन को कारज कीजे ।। २ ।।

मेरे उर में मोक्ष की तलब लगी है। साहेब मुझे धैर्य दिजिए आपके भक्ति में रमने की हिम्मत दिजिए। आप आपके दिल से याने उर से मेरे ओर ध्यान दिजिए और मेरा मोक्ष का कारज कीजिए। ।।२।।

धरज मेरे मन के नाही ।। निमक निमक ब्रेह आवे ।।
पल पल ब्याकुळ व्हे ओ प्राणी ।। जीव दसूं दिस जावे ।। ३ ।।

मेरे मन को धिरज नहीं रहा है। पलपल में तेरे मे मिलने का विरह आ रहा है। मेरा प्राण तेरे लिए पल पल व्याकुळ होकर दसो दिशा में तुझे ढुँढ रहा है। ।।३।।

बळ साहेब सतगुरू हरि दीजे ।। भांजो भ्रम अंधेरा ।।
मेरा क्रम काट कर काने ।। मेट चोरासी फेरा ।। ४ ।।

मेरे सतगुरु,मेरे साहेब,मेरे हरी आप मुझे मोक्ष पाने का बल दो। आप मेरी त्रिगुणी माया से मुक्ति पाने की सत्ता समझके भ्रम,अंधेरा तोड दो। मेरे चौरासी में पडने के कर्म काटकर मेरा चौरासी का फेरा मिटा दो। ।।४।।

जीव बिचारो क्या कर सक्के ।। रेत रेण सो कोई ।।
के सुखराम आपकी कृपा ।। भक्त करूंगा सोई ।। ५ ।।

जीव बिचारा क्या कर सकता। जैसे राजा के राज्य में एखाद प्रजा ही दु:ख निवारने के लिए अति बेहाल,दु:खी हुईवी रहती,उसके दु:ख वह खुदके बल पर दूर कर नहीं सकती,ऐसे अती बेहाल हुयेवे प्रजा को सिर्फ यह राजा ही दु:ख में से मुक्त करने का आधार रहता ऐसेही आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है हे प्रभु,मै खुदके बल पर मोक्ष को जाने के लिए अति दुर्बल हूँ,इसलिए आप ही मुझे मोक्ष को भेजो। ।।५।।

२८४

।। पदराग आसा ।।

प्रभूजी मै किसका सरणाँ धारूं
प्रभूजी मै किसका सरणाँ धारूं ।।
भोळप माँहि किया गुरू च्यारी ।। को तज किस बिन सारूं ।। टेर ।।

प्रभुजी,मैं किसका शरणा धारण करु?मैंने भोलेपण में चार गुरु धारण किए। अब मैं किसका शरणा धारे रखु?और किसका शरणा त्यागन करु?कृपा करके मेरी यह दुविधा मिटा दो। ।।टेर।।

किरपा करे हमारे माँहि ।। नाँव केवळ हरि आया ।।
ताँ पीछे गुरू भोळप माही ।। लालदास कूं गाया ।। १ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मुझे समंत १७९१ मे हरी के दर्शन हुए जिससे मेरे घट में कैवल्य नाम प्रगट हो गया और वह नाम देह में पश्चिम के रास्ते से दौडने

लगा। मेरे सभी परिवार के गुरु मेलाणा के लालदासजी दादुपंथी थे इसकारण मैंने भी भोलेपन मे लालदासजी को गुरु धारण किया। ।।१।।

बाणी कहुँ रीत बोहो भारी ।। सबद पिछम दिस धावे ।।
तब मै छाड़ लाल कू दीया ।। बूजा अर्थ न आवे ।। २ ।।

हरी के रुप में पाए हुए केवली सतगुरु के प्रताप से कैवल्य शब्द मेरे देह में पिछे के रास्ते से दौड्ने लगा और मेरे मुख से अमर लोक की जिसमें तीन लोक के त्रिगुणी माया का जरासा भी अंश नहीं ऐसी भारी वाणी कुद्रती निकलने लगी। मैं यह पश्चिम के रास्ते से होनेवाले अनुभव को समझ लेने के लिए गुरु लालदासजी के पास गया और घट में बिते जा रही है उन अनुभव की सारी बातें पूछ्ने लगा तो लालदासजी उसपर जरासी भी ज्ञान समझ नहीं दे पा रहे थे,उलटा भ्रम में अटका रहे थे इसलिए मैंने लालदासजी गुरु का त्याग किया। ।।२।।

रामदास के दर्शण आया ।। पूजा टेल चढाई ।।
तब जन राम बूजणे लागा ।। को गुरू तेरा भाई ।। ३ ।।

आगे मुझे बिरमदासजी महाराज गुरु मिले। उनसे मुझे निजपद की समाधी लग गई। यह निजपद की ध्यान की स्थिती परखाने के लिए मैं रामदास जी के दर्शन गया उन्हें पूजा टेहेल चढाई। पुजा टेहेल चढाने पर रामदासजी ने मुझे तम्हारे गुरु कोन है?यह पुछा ।।३।।

तब मै कहयो गुरू हे बीरम ।। निजपद मोही बताया ।।
मेरे रीत बणी हे अेसी ।। मे परखावण आया ।। ४ ।।

तब मैंने रामदासजी से कहा की,मेरे गुरु बिरमदासजी है और उनके प्रताप से मुझ में निजपद प्रगट हुआ। यह निजपद की रीत परखाने के लिए मैं आपके पास आया। ।।४।।

जब जन रामदास जी बोल्या ।। रीत पकी हे थॉरी ।।
थाको भेव अग्या सुण लीया ।। बोहोत बणेगी भारी ।। ५ ।।

तब रामदासजी बोले की तेरे घट में प्रगट हुईवी रीत पक्की है परंतु यहाँ का भेद और आज्ञा लेने से तुझ में प्रगट हुई वी निजपद की रीत और भी भारी बनेगी। ।।५।।

बीरमदास यांही का चेरा ।। इशा भेद मुज दीया ।।
जब मे जाय सुण्यो भाई अेसी ।। रामदास गुरू कीया ।। ६ ।।

बिरमदास यही का चेला है ऐसी बात रामदासजी ने मुझे बताई रामदासजी की यह बात सुनकर मैं रामदासजी का चेला बन गया। ।।६।।

बूजा बांत बीरमजी खीज्या ।। जाब मुज कू दीयो ।।
मुज कूं करे नीच को चेलो ।। दगो रामदास कीयो ।। ७ ।।

गुरु बिरमदासजी मिलने पर मैंने गुरु बिरमदासजी से पूछा की आप रामदासजी के चेले है ना तब बिरमदासजी ने कहा की,मैं रामदासजी का चेला नहीं हूँ। मैं रामदासजी का चेला हूँ

यह रामदासजी तेरे साथ झूठ बोले और कपट खेलकर दगेसे तुझे शिष्य बना लिया । ।।७।।

च्यारी गुरू इसी बिध कीया ।। सुणो संत सब कोई ।।
अडवी पड़ी न्याव सब कीजे ।। सतगुरू कहो कुण होई ।। ८ ।।

इसप्रकार मैंने चार गुरु धारण किए इसलिए प्रभुजी और प्रभुजी के सभी संत चार गुरु करने की मुझ पर बिती हुई कहानी आप सभी ध्यान देकर सुनो,अब मैंने किसे गुरु समझना और किसे गुरु नहीं समझना यह मेरे समझमें नहीं आ रहा इसलिए आप सभी मेरे इस अड्वी समझ को ज्ञान से न्याय कर मेरे सच्चे सतगुरु कौन कौन है?यह मुझे बताओ। ।।८।।

मेरे बस कछु अब नाही ।। बांत गई हे फेली ।।
हरजन साध संत सुण सायब ।। राम करे सो व्हेली ।। ९ ।।

चार–चार गुरु करने से मेरे निजपद के भेदी सतगुरु कौन है यह बात समझना मेरे हाथ से निकल गई है इसलिए आप सभी हरीजन केवली साधू संत एवम् रामजी साहेब आप जो न्याय करोंगे वही मेरे लिए सिरोताज रहेगा। ।।९।।

मै मत्त हीण बुध्द सुण ओछी ।। अकल नही तन माँही ।।
के सुखराम रखे जा रूँला ।। सुण हो आद गुसांई ।। १० ।।

मैं मतहीन हूँ,मेरी बुध्दि ओछी है। मेरे तन में यह समझने की अक्कल नहीं है। इसलिए आद गुसांई आप ही मेरा न्याय करो और आप मुझे जो गुरु बताओंगे उनके शरण में रहुँगा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने रामजी से और सभी केवल ज्ञानी संतो से खुद को सच्चाई समजने के लिए विन्रमता से पूछा। ।।१०।।

३२७

।। पदराग बिहगडो ।।

समरथ मे तेरा सरणा लीया
समरथ मे तेरा सरणा लीया ।।
ग्यान सुण्यो हे गुरां के मुख सूं ।। तब मेरा मन बिया ।। टेर ।।

हे समरथ,जब मैंने सतगुरुजी के मुख से काल के भयंकर जुलूम सुने तब मेरा मन काल के दु:खों से डरा और आपका शरणा लेना चाहा इसलिए मैंने तेरा शरणा लिया। ।।टेर।।

किरपा करे हरि मेरे आवो ।। सुण हो आद गुसांई ।।
खबर करो हरि मो आपत्ती की ।। द्रसण दो उर माही ।। १ ।।

इसलिए कृपा करके हरी आद गुसाई मुझमें प्रगटो। हे रामजी,तुम मेरा कालका दर्द समझो। मैं काल के आपत्ती में फँसा हूँ इसलिए आप मेरे हृदय में दर्शन देकर मुझे काल से छुड़ाओं। ।।१।।

घणी अरज हरि कहाँ लग कर सूं ।। नेक ब्होत कर मानो ।।
चीत कर आप छेक जम लेखा ।। मो कूं चाकर जाणो ।। २ ।।

हे रामजी,मुझे आपकी अरज करनी नहीं आती। जैसे और जितनी थोडी बहुत अरज करते

आयी उसी को बहुत समझकर मुझे आपका चाकर मान लो और याद कर मेरे जम के पाप पुण्य के सभी हिसाब किताब फाड दो। ।।२।।

जेसा बिड़द तुमारा कहिये ।। नाव बखाणज होई ।।
मेरा लछ कूं लछ मत देखो ।। राम बिड़द दिस जोई ।। ३ ।।

आपके नाम और बिड्द की तिनो लोको में महिमा है इसलिए रामजी मेरे बुरे लक्षण न देखते तुम्हारा तारने का ब्रिद देखो। ।।३।।

टाबर सदा कुं टाबर होवें ।। बाप बिरच नही जावे ।।
के सुखराम सुणो मेरा ठाकुर ।। अे तेरा बिड़द कहावे ।। ४ ।।

बच्चे तो सदाही बच्चे ही होते है। बच्चे कैसे भी हरकते करते रहे तो भी बाप बच्चोंको छोड नहीं देता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की मेरे ठाकुर,पिता से भी आपका बिड्द बडा है ऐसा सभी कहते है। ।४।।

३८६

।। पदराग भेरू (प्रभाती) ।।

सुणज्यो अर्ज हमारी प्रभुजी
सुणज्यो अर्ज हमारी प्रभुजी ।। सुणज्यो अर्ज हमारी ।।
जे तन खून गुन्हा सब बगसो ।। राखो श्रण तुमारी ।। टेर ।।

प्रभुजी,मैंने आपसे किए हुए गुन्हें माफ कर दो और आप मुझे आपके शरण में ले लो यह मेरी अरज सुनलो। ।।टेर।।

तुम प्रतपाळ उधारण स्वामी ।। में हूं कर्म बिलासी ।।
अब तो श्रण तुमारी आयो ।। काटो जम की फासी ।। १ ।।

आप मेरा उध्दार करनेवाले स्वामी हो,मैं विषय वासनाओं और का कर्म विलासी हूँ। अब मैं आपके शरण में आ गया हूँ इसलिए आप मेरी जम की फाँसी काटो। ।।१।।

मे तुज बिड़द इसो हर सुणियो ।। अजामेळ सा ताऱ्या ।।
गिनका तिरी बिकारां माही ।। गजका फंद निवाऱ्या ।। २ ।।

तुने अजामेल सरीखा पापी,विकारोंमें डुबी हुई वेश्या तुझे न जाननेवाला पशु हाथी आदि प्राणियों को तारा यह तेरा पापियों को तारने का बिड्द मैंने सुना इसलिए मैं तेरे शरण आया। ।।२।।

मे तुछ जीव बुद बुद्यो सांई ।। क्या कर्णी ओ करसी ।।
जब हर आप करोला कृपा ।। तबे अवस ओ तीरसी ।। ३ ।।

मैं तुच्छ जीव हूँ बिना बुध्दि का जीव हूँ। मैं तिरने की क्या करणी कर सकता। जब हर आपही कृपा करोगे तब ही निश्चित रुप से मैं तिर सकूँगा। मैं मेरे करणियोंसे कभी नहीं तिर पाँऊगा। ।।३।।

तुम तारो जब स्मरथ सांई ।। क्हो कुण राखण हारा ।।

चवदा भवन लोक मिल तीनूं ।। सब ले आप पसारा ।। ४ ।।

आप समर्थ साई,जब मुझे तारोंगे तब तुम्हें मुझे तारने से कौन मना करेगा। तीन लोक चौदा भवन के सभी देवी,देवता,अवतार नर–नारी आपने पसारी है फिर इनमें से मुझे तारने का कौन मनाई करेंगा? ।।४।।

ग्यान ध्यान कर्णी अर क्रिया ।। मोपे सझे न काई ।।
के सुखराम मिल्यां धर माही ।। किया करम नही जाई ।। ५ ।।

साँई मेरेसे माया के ज्ञान,ध्यान,करणियाँ,क्रिया सजती नहीं। मेरे किए हुए पाप कर्म मैं धरती में जाकर प्राण भी त्यागा तो भी मिटनवाले नहीं इसलिए मैं मेरे किसी भी बल से तिर नहीं सकता यह मैं समझता। ।।५।।

४०४

।। पदराग कानडा ।।

तुम बिन आन ओर नही धारूं

तुम बिन आन ओर नही धारूं ।। तन मन जीत पचीसुं मारूं ।। टेर ।।

हे साहेब,मैं आपके सिवा और किसीका शरणा धारण नहीं करुँगा। आपकी कृपा बनी तो मैं मेरा विकारी मन,मेरे पाँच विकारी आत्मा,पच्चीस विकारी प्रकृतियाँ को मार सकुँगा। ।।टेर।।

नित उठ तोय पुकारूं सांई ।। मिल साहेब हर अंतर मांई ।। १ ।।

इसलिए हे साहेब,आप मेरे अतंर में मिलो यह मेरी आपसे नित्य याने हरपल पुकार है ।।।१।।

मेरे नित चोट सबद की लागे ।। तूम मिलियां बिन करक ना भागे ।। २ ।।

मुझे आपके शब्द याने सतज्ञान की आपके मिलने की नित्य चोटे लगती है। वो मिले बगैर मेरा यह दर्द कभी नहीं जाएगा। ।।२।।

केहे सुखराम यो जनम अकाजा ।। जब लग अव गत परसुं न राजा ।। ३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,जब तक मैं आपको घट में पाता नहीं तब तक मेरा मनुष्य जन्म व्यर्थ जा रहा है। ।।३।।